पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्म लगते असौज तीज सन् 1942 में ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद, जनपद गाजियाबाद (पहले मेरठ) उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री नानक चन्द और माता जी का नाम श्रीमती सोना देवी था। लगभग दो मास की अवस्था में शवासन में लेटने से ही कुछ समय के उपरान्त शिशु की गर्दन दोनों ओर हिलने लगी और होठ फड़फड़ाने लगे। इस क्रिया की पुनरावृत्ति होने पर अज्ञानतावश उपचार प्रारम्भ हो गया। परन्तु उस विशेष अवस्था में जाने की घटनाएँ बढ़ती रहीं और आयु बढ़ने के साथ-साथ मन्त्र-पाठ और प्रवचन स्पष्ट सुनाई देने लगा। छः वर्ष की आयु में इन्हें भयानक चेचक निकली जो इनके मुख-मण्डल पर अपनी स्मृति छोड़ गई।

सात वर्ष की अल्पायु में ही इनके पिताश्री ने अपने गाँव में ही पशुओं व कृषि के कार्य के लिए नौकर रख दिया। धीरे-धीरे इनके प्रवचनों की क्रिया को मनोरंजन व कौतुक का साधन बनाया जाने लगा। एक दिवस प्रवचन की प्रक्रिया के पश्चात् अत्यधिक पिटाई के कारण लगभग 15 वर्ष की अवस्था में भीषण परिस्थितियों में मध्य रात्रि में गृह को त्यागकर विचरण करते हुए अपनी कर्मभूमि बरनावा जा पहुँचे वहाँ पर आप योग मुद्रा में समाधिस्थ होकर प्रवचन करने लगे, जिसकी सुगन्धी आस-पास में तीव्रता से फैल गई। आपने अपने प्रवचनों के माध्यम से वेद ब्रह्म पारायण यज्ञों का आयोजन करना शुरु कर दिया। जन-समूह के अथाह प्रेम व सहयोग से वारणावत लाक्षागृह पर पाँच यज्ञशालाएँ, महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, आश्रम व गऊशाला की स्थापना की, जिसका प्रबन्ध उनके द्वारा स्थापित श्री गाँधी धाम समिति की देखरेख में होता है।

पूज्यपाद गुरुदेव 28 दिसम्बर 1961 में पहली बार दिल्ली प्रवचन के लिए आए। अथाह ज्ञान के भण्डार, आध्यात्मिक जगत की महान् व अद्भुत विभूति के प्रवचन सुनने के पश्चात् प्रवचनों को टेप करने का निर्णय लिया गया और कुछ समय के उपरान्त प्रवचनों को टेप करके प्रकाशित करने के लिए पूज्यपाद गुरुदेव की संरक्षकता में वैदिक अनुसन्धान समिति का दिल्ली में गठन हो गया। जन्म जन्मान्तरों के शृङ्गी ऋषि की पुण्य आत्मा ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज इस अज्ञानता के युग में वैदिक संस्कृति का पुनः से उत्थान करने के लिए जीवनपर्यन्त लगे रहे। ऋषि-मुनियों ने अनुसन्धान के द्वारा भौतिक व आध्यात्मिक विज्ञान को अपने जीवन में कितना साकार किया है उसकी अथाह चरमसीमा इनके प्रवचनों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इस अथाह ज्ञान को मानवता के लिए आचरण व व्यवहार में लाने का सरल व श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शित किया है और साहित्य की गुत्थियाँ स्पष्ट की हैं। जिससे मानव अपना व जनसाधारण का कल्याण करते हुए इस भव सागर से पार हो सकता है।

यह दिव्य आत्मा 15 अक्टूबर 1992 को पचास वर्ष की अवस्था में ब्रह्ममूहुर्त के समय अपने लोकों को गमन कर गई। **–वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! मेरा जो क्रियात्मक जीवन है – मैं उसे सदैव चाहता रहता हूँ कि मेरा जीवन इस संसार में कर्मठता को प्राप्त होता रहे क्योंकि कर्मठता ही तो जीवन है, अकर्मण्यता ही मृत्यु है, जिसे हमें जानना है। हम सदैव अपने जीवन में विचार-विनिमय करते रहते हैं। हे भगवन्! तू वास्तव में विचारकों का भी विचारक है, सदैव अखण्ड रहने वाला है, तेरा संसार में कोई विभाजन भी नहीं कर पाता, तू इतना महान् है और विभु माना गया है जो सर्वत्र ओत-प्रोत है। मैं आपके चरणों की वन्दना करने आ रहा हूँ, प्रभु! यह जो अन्तरिक्ष है यह आपका मस्तिष्क ही है, प्रभु! ये जो दिशाएँ हैं यही तो आपकी भुजाएँ हैं, यह पृथ्वी ही तो आपके तालू का कार्य कर रही है। भगवन्! आप जो पृथ्वी पर विचरने वाले नदीवत् हैं, यह आपके नाना स्त्रोत हैं, आपके शरीर के स्त्रोत हैं, पर्वत अस्थियों का कार्य करते रहते हैं। भगवन्! यह जो सारा जगत है यह एक ब्रह्म के स्वरूप में मुझे दृष्टिपात आ रहा है।

प्रभु! यह जो संसार मुझे दृष्टिपात आ रहा है यह क्या है? इसको मैं जान नहीं पाता, जहाँ केवल अपने ही मानववत् को नष्ट किया जाता हो प्रभु! मुझे यह जगत सुन्दर प्रतीत नहीं होता। मुझे तो केवल एक ब्रह्म ही प्रतीत होता है, जिसका यह विराट ब्रह्माण्ड एक शरीरवत् प्रतीत होता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 592 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 667
वर्ष : 51 44 समग्र वर्ष : 57

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. प्रभु को जाने और चिन्तन करें	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-24
4. चरित्र का स्त्रोत	पूज्यपाद-गुरुदेव	25-37
5. ऋषियों के उद्‌गार		38
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की सद्‌प्रेरणा एवम् शुभ आशीर्वाद से वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा पुनः से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग का आयोजन आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली के प्राङ्गण में दिनाँक 25 नवम्बर 2022 से 27 नवम्बर 2022 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सभी अपने सम्बन्धियों, मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

आप सभी को दशहरा एवम् दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें।

॥ ओ३म् ॥

प्रभु को जाने और चिन्तन करें

जीते रहो!

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का पठन-पाठन करते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, जिन वेद मन्त्रों का पठन हमारे यहाँ सुन्दर पाठ्यक्रम प्रायः वर्णन रहता है। विचार-विनिमय करने लगते हैं, यह कर्म है, मानो उसमें कितना विवरण, अभिरचुतमं मानो वह नाना प्रकार की सुन्दर पद्धतियों से इसका सुगठित मिलान होता है। जब हम यह विचार-विनिमय करने लगते हैं, कि हमारी वास्तव में जो वैदिक परम्परा है, वह मानव के लिये, मानव को मानव बनाने के लिये सदैव अग्रणीय रही है। क्योंकि हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, मुझे स्मरण आता रहता है, बेटा! जब यहाँ ऋषि मुनि, एकान्त विराजमान हो करके, मुनिवरो! आत्मा, परमात्मा की विवेचनाएँ अथवा अपने मानसिक सन्तुलन के ऊपर, विचार-विनिमय प्रायः होता रहा है। क्योंकि वैदिक परम्परा में सबसे ऊँची-ऊँची वार्त्ता है, जो मानव को विचार-विनिमय करना है, जिसके ऊपर अनुसन्धान भी करना है, मानव को सबसे प्रथम अपना जो मानसिक सङ्कलन है, मानसिक जो प्रवृत्ति है, उनको सबसे प्रथम संयम करने की आवश्यकता रहती है।

जीवन में सुगन्धि

हमारे ऋषि-मुनियों ने बेटा! परम्परागतों से ही, मुझे भी स्मरण आता रहता है जब मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव के समीप जाता था, तो नाना प्रकार के प्रश्न, नाना प्रकार की विवेचनाओं के द्वारा और अपने उद्गम् विचारों से भी मानो देखो, अपने भ्रान्ति भरे शब्दों को भी प्रायः करता रहता था। मेरा हृदय उस समय बड़ा प्रसन्न रहता था, जब मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव विज्ञान के युग में पहुँचते हुये, वैज्ञानिक रूपों से अपनी रूप रेखा का वर्णन कराते थे। उन्होंने सबसे प्रथम एक

ही वाक्य कहा है कि **मानव को वास्तव में ऊँचा बनना है, अपने विचारों को, अपने मानसिक सङ्कलन जो शक्ति है, उसको उज्ज्वल बनाना है।** परन्तु वह उज्ज्वल किस काल में बनती है? जैसा मुनिवरो! देखो, इससे पूर्व वाक्यों में हमने प्रगट कराते हुये कहा था, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के उन्हीं वक्तव्यों की विवेचना प्रगट करते हुये, हमारा हृदय उद्‌गमता से, गौरव से पुकारता चला जा रहा था, कि वास्तव में, हमें परमपिता परमात्मा ने अहा! जो आनन्द का स्त्रोत है, चैतन्य है, मानो जिस मेरे प्रभु ने यह मानव शरीर रूपी, जो यज्ञवेदी बनाई है, मानो इस यज्ञवेदी को हमें पवित्र बनाना है, हमें इसे दुर्गन्धवत् नहीं बनाना है, सुगन्धिवत् बनाना है। जैसे बेटा! पृथ्वी के गर्भ में, नाना प्रकार की वनस्पतियों का जन्म होता है, मानो वह संसार को सुगन्धि प्रदान करती चली जाती है, इसी प्रकार परमात्मा के क्षेत्र में जब हम आते हैं, हमारा भी कर्त्तव्य हो जाता है, क्या हम अपनी वाणी से, अपनी प्रत्येक इन्द्रियों के द्वारा बेटा! हम सुगन्धि को उत्पन्न करते रहें, सुगन्धि देते रहें। **सुगन्धि का अभिप्रायः क्या है?** सुगन्धि उसको कहा, सुगन्धि वही प्राणी प्रदान कर सकता है, जो स्वयं अपनी सुगन्धि को जानता है, क्या तेरे हृदय में कौन-सी सुगन्धि है, जिसको तुझे जानना है। बेटा! वह है, चैतन्यवत् मानो वह उसकी मानसिक जो सङ्कलन है, मानसिक जो प्रवृत्ति है, उसको जब हम विचार-विनिमय करेंगे, तो बेटा! वह अमृत, वह सुगन्धिवत् हमें स्वयं प्राप्त होने लगेगा। जैसे मेरी पवित्र माता है, परन्तु जब वह अपने वैज्ञानिक रूपों से अपने बालक को जन्म देती है, उस समय वह अपने हृदय से क्योंकि वह जानती है, क्योंकि जो मेरी पुनीत माता है, आयुर्वेदा महापण्डिता होती है, वह यह जानती है कि अमुक समय में, इस मास में, मेरे गर्भस्थल में, मेरे कौन से मानो पुत्री हो, पुत्र हो, कौन-सी प्रवृत्तियों की रचना हो रही है। कौन-सी इन्द्रियों में कौन-सा भाव, किस काल में प्रदान किया जाता है।

पुनीत माताओं का जीवन

मुझे स्मरण आता रहता है, बेटा! माता मदालसा का जीवन यहाँ एक ही वाक्य स्मरण नहीं आता बेटा! माता कौशल्या का जीवन भी स्मरण आता रहता

है, यह माता देवकी का जीवन भी मुझे स्मरण आता रहता है, जहाँ बेटा! उन्होंने देखो, कारागार में एक महाविभूति एक महापुरुष को जन्म देने वाली, मेरी पुनीत माता थी, इसी प्रकार बेटा! जो आयुर्वेदा महापण्डिता होते हैं, मेरी प्यारी माता को सबसे प्रथम आयुर्वेदा पण्डिता हो जानी चाहिये। क्योंकि उसे संसार में, उसे राजा और महा ऋषि-मुनियों को उत्पन्न करना है, क्योंकि उसी को संसार, मेरी पुनीत माता को यह राष्ट्र और समाज को उन्नत बनाना है। क्योंकि उन्नत उस काल में बनता है, जब बेटा! माता की प्रवृत्ति विशाल होती है। माता अपनी प्रवृत्तियों में विशालता जब होती है, सङ्कलनबद्ध होती है, उस समय बेटा! माता के गर्भस्थल से सुन्दर महान् पुत्र का जन्म होता है।

मेरे प्यारे ऋषिवर! मुझे स्मरण आता रहता है, माता कौशल्या का जीवन, माता कौशल्या ने मुनिवरो! देखो, भगवान् राम के गर्भस्थल में रहते हुये, उन्होंने बेटा! देखो, राष्ट्र के अन्न को भी ग्रहण नहीं किया। यह तो उनकी प्रबलता थी, यही तो उनकी विशेषता थी और उनकी माता, मातावत् बनने के लिये बेटा! उनका कितना ऊँचा सङ्कल्प रहता है। तो मेरे प्यारे ऋषिवर! हमारे यहाँ किसी भी माता को वसुन्धरा कहा गया है, वसुन्धरा क्यों कहा गया है? क्योंकि यह अपने में वशीभूत करती है, नाना प्रकार की प्रवृत्तियों को प्रदान कर देती है, माता मदालसा का यही तो संकल्प था, राजा से कि हे भगवन्! मैं अपने गर्भस्थल से पुत्र को जन्म देना चाहती हूँ, पुत्री को जन्म देना चाहती हूँ, पाँच वर्ष की मेरी शिक्षा होगी। राजा ने बेटा! उसी वाक्यों को स्वीकार किया था, परन्तु देखो, वह कितनी आयुर्वेद, कितना उसके हृदय में समाहित हो रहा था। परन्तु देखो, उसके हृदय में, आयुर्वेद की पवित्र विद्या बेटा! इतनी प्रतिष्ठित हो रही थी, क्या उसका हृदय पुकार-पुकार के यह कहता था, कि वास्तव में मुझे इस राष्ट्र को, समाज को उन्नत बनाना है। मानो देखो, इस महान् पुनीत विद्या को ऊँचा बनाना है। क्योंकि वैदिक विद्या का जो मानो ह्रास होता है, उस काल में होता है, जब मेरी पवित्र माता अपने कर्त्तव्य को त्याग देती है बेटा! मुनिवरो! देखो, यहाँ एक वाक्य नहीं मैंने कल के वाक्यों में तुम्हें प्रगट कराते हुये कहा था, कि माता जाबाला ने बेटा! एक ही पुत्र को जन्म दिया, सत्यकाम को जो मुनिवरो!

षोडश कलाओं का विज्ञानवेत्ता बना, परन्तु देखो, यह माताओं की विशेषज्ञता होती है, परन्तु उनकी पवित्र विद्या का यही तो प्रभाव होता है, क्या, वह अपने गर्भस्थल से और अपनी मानवीयता को जानना ही बेटा! संसार में एक मानसिक सन्तुलन कहलाया गया है।

कर्त्तव्य और मानवीयता का चिन्तन करने की प्रेरणा

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मैं इन वाक्यों में नहीं जाना चाहता हूँ, वाक्य केवल हमें यह उच्चारण करना है, आज का वेद पाठ हमें क्या कहता चला जा रहा है। आज के इस वेद पाठ में, आज के सुन्दर पाठय्क्रम में हमारे यहाँ जो वर्णन किया जा रहा था, कि हम परमपिता परमात्मा को जानने वाले बनें। जो परमात्मा चैतन्य देव है, मानो इसकी प्रतिभा बेटा! जब प्रकृति के कण-कण में ओत-प्रोत हो रही है।

आओ, मेरे प्यारे ऋषिवर! आज हम अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिये, उस वैदिक आनन्दमयी प्रकाश को अपनाते चले जायें, जिस प्रकाश को अपनाने के पश्चात्, हमारा जीवन वास्तव में पवित्रवत हो जाता है। तो मेरे प्यारे ऋषिवर! जब हम अपनी मानवीयता से, अपने जीवन को मन्थन किया करते हैं, उस समय हमें यह प्रतीत होता है कि वास्तव में हमारा जीवन मन्थन के योग्य है। विचारणीय है, इसको विचारना है, संसार में। बेटा! देखो, सृष्टि के आदि से ले करके, वर्तमान तक इतना काल आता रहेगा। परन्तु मानवीयता के ऊपर मुनिवरो! देखो, कितनी टिप्पणियाँ ऋषि-मुनियों ने की हैं। क्या कणाद है, क्या गौतम है, क्या व्यास है, मुनिवरो! प्रत्येक महापुरुषों ने बेटा! इसके ऊपर टिप्पणियाँ की हैं। भगवान् कृष्ण ने भी इसी के ऊपर टिप्पणियाँ की हैं, और बेटा! भगवान् राम ने भी वशिष्ठ मुनि महाराज उनके विचारों को, तुम दृष्टिपात करोंगे, तो उनके विचारों पर भी मानवत्व के ऊपर तुम्हें टिप्पणियाँ तुम्हें प्राप्त होती रहेंगी। विचार क्या है कि आज हम देखो, उन टिप्पणियों पर न जाते हुये, केवल यह क्या, हम अपने कर्त्तव्य और अपनी मानवीयता पर विचार-विनिमय करें।

मृत्यु का स्वरूप

आज का वेद पाठ हमें यह उच्चारण कर रहा था, क्या हम सदैव मृत्यु से पार होने का प्रयास करें, क्योंकि संसार में मानव जितना भी प्रयास करता है, मृत्यु से विजय होने का किया करता है। मेरी प्यारी माता, यह कहा करती है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिये, मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाले बालक की भी मृत्यु भी नहीं होनी चाहिये। मेरा सौभाग्य भी अखण्ड बना रहे, परन्तु इसी प्रकार, प्रत्येक मानव भी यह विचार-विनिमय करता है, परन्तु देखो, मृत्यु है क्या? विचार नहीं किया जाता कि मृत्यु क्या है? हमारे ऋषि-मुनियों ने तो यह कहा है कि मृत्यु ही ब्रह्म है, परन्तु देखो, मृत्यु ही संसार को निगल जाता है, जैसे मुनिवरो! देखो, अग्नि, अग्नि नाना प्रकार के पदार्थों को निगल जाता है, इसी प्रकार और अग्नि को जल निगल जाता है, इसी प्रकार मुनिवरो! देखो, यह जो ब्रह्म है, यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड को निगल जाता है, प्रत्येक प्राणी की आयु को निगल जाता है। इसी प्रकार बेटा! आज हम विचार करने वाले बनें कि कौन किस वस्तु को निगल जाता है। मेरे प्यारे ऋषिवर! प्रत्येक मानव मृत्यु से पार होने का प्रयास करता रहता है, उससे मानो एक सङ्कलन रहता है, क्या मैं मृत्यु से विजय होना चाहता हूँ। परन्तु विचार यह आता है कि मृत्यु क्या है? क्योंकि मृत्यु को चुम्बन करना कोई आश्चर्य नहीं, यह भी एक मानव का विचार हैं, मानव का सङ्कलन है, जब मृत्यु का ज्ञान हो जाता है कि मृत्यु यह वस्तु है, मृत्यु यह पदार्थ है, तो बेटा! देखो, मानव को किसी प्रकार का भय नहीं होता, मानव को सबसे प्रथम जो भय होता है, भयभीत होता है, अपने कर्मों क्या होता है, दुष्कर्मों क्या होता है, जब मानव अपने दुष्कर्मों को त्याग देता है, तो बेटा! वह संसार में निर्भय हो जाता है। न उसे मृत्यु का भय होता है, और न बेटा! देखो, उसे अजीर्ण होने का भय होता है, परन्तु वह संसार में निर्भयवत् हो जाता है।

यज्ञ के दस पात्रों को पवित्र बनायें

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मैं इस वाक्य को अधिक उच्चारण नहीं करूँगा, केवल यह वाक्य आज इसीलिये मुझे उच्चारण करने का, मुझे सौभाग्य प्राप्त हो

रहा है, जैसा महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के शब्दों पर विचार-विनिमय हो रहा था, क्या, आज मानव को क्या, आज मानव को यह विचारना है कि प्रत्येक इन्द्रियों को, प्रत्येक यज्ञ के दस पात्रों को पवित्र बनाना है। उसके ऊपर मानव को सदैव टिप्पणी करना है, विचार-विनिमय करना है, प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को, मुनिवरो! उनकी सामग्री बनाना है, उनको हृदयरूपी जो स्थल है, हृदयरूपी जो शाला है, उसमें ज्ञान की जो ज्योति जो प्रगट होती है, उस ज्योति में हमें स्वाहा देना है, आहुति प्रदान करना है। मेरे प्यारे ऋषिवर! जैसे बाह्य यज्ञ होता है, बाह्य यज्ञशाला में मानो देखो, ब्रह्मा यजमान से यज्ञ कराता है, इसी प्रकार मुनिवरो! देखो, अपनी मानवीय नाना प्रकार की जो प्रवृत्तियाँ हैं, इन्द्रियों का जो विषय है, उनकी जब मुनिवरो! देखो, मन के द्वारा सामग्री एकत्रित हो जाती है – यज्ञम् ब्रह्मे कृताना मुनिवरो! देखो, वही तो हुत कहा जाता है। वास्तव में हुत यही कहा जाता है, जैसा हमारे यहाँ आता है, क्या परमपिता परमात्मा ने बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ में सात प्रकार के अन्नों को उत्पन्न किया। इन अन्नों में सबसे प्रथम अन्न, जो सबका साझा अन्न है, उसके पश्चात् दूसरा अन्न पशुओं को प्रदान कर दिया, और तीसरा जो अन्न है, वही तो मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ हुत कहा गया है, जिसकी आहुति देने से, मुनिवरो! देखो, तीसरे प्रकार का अन्न, हमारे यहाँ वर्णन किया गया है, मैं इन अन्नों की विवेचना देने नहीं आया हूँ। वाक्य केवल यह है कि आज हम देखो, इस शरीर में, आज हम देखो, यज्ञ के दस पात्रों को पवित्र बनाने का प्रयास करें। क्योंकि इसी से हम सुन्दर और महान् यज्ञ कर्म कर सकते हैं, और मृत्यु से वही पार हो सकता है, बेटा! जो इन दस पात्रों को जान जाता है। दस पात्रों की प्रतिभा को जान जाता है। परन्तु इसके द्वारा यह दस पात्रों की प्रतिभा को जो मानव नहीं जानता, वह मानव सुन्दर बेटा! देखो, मृत्यु से विजय नहीं हो पाता। क्योंकि मृत्यु से विजय तो वही बनेगा, जो मानव अपने मानवीयवत् को विचार जाता है, मानव अपने तन्तु को विचार जाता है।

महाराजा ज्ञानश्रुति का जीवन

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज का हमारा यह वाक्य क्या कह रहा है, मैं इसके

ऊपर अधिक टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। विचार-विनिमय केवल यह है, क्या मृत्यु से विजय होना है। बेटा! एक वार्त्ता मुझे स्मरण आती चली गई इस सम्बन्ध में, एक समय बेटा! देखो, भगवान् मनु प्रणाली में, भगवान् मनु देखो, अप्रतम् दो हजार के लगभग मुनिवरो! देखो, प्रणाली में महाराजा ज्ञानश्रुति का जन्म हुआ था। महाराजा ज्ञानश्रुति का जीवन वास्तव में सदैव पवित्र रहा है, क्योंकि भगवान् मनु की प्रणाली में, हमारे यहाँ देखो, ज्ञानश्रुति नाम के राजा हुये, जो तुम्हें बेटा! स्मरण होगा। भगवान् मनु की, मुनिवरो! साढ़े सात हजार प्रणालियों ने राज किया इस संसार में। क्यों किया है? क्योंकि उनके द्वारा चरित्र की प्रतिभा, मानव की प्रतिभा समीप रही है, निर्मोहीपने की समीप रही है। मेरे प्यारे ऋषिवर! संसार में वही मानव सफलता को प्राप्त होता है, जो मानव मुनिवरो! देखो, अपने मानवीयतव को विचार लेता है, चाहे मुनिवरो! राजा हो, प्रजा हो, चाहे महापुरुष हो, परन्तु देखो, उन्हीं का नामोच्चारण परम्परागतों से हमारे यहाँ सदैव उच्चारण में रहा है। मानव की वाणी में, मस्तिष्क में, हृदय में उसकी प्रतिष्ठा होती रही है।

मेरे प्यारे ऋषिवर! महाराज ज्ञानश्रुति एक समय अपने आसन पर विराजमान थे, विराजमान होते, उन्होंने अपने महामन्त्री से कहा हे मन्त्री! मेरी इच्छा ऐसी है कि मैं ब्रह्मज्ञानी, एक महापुरुष को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। उनसे कुछ उपदेश लेना चाहता हूँ, जाओं, तुम ब्रह्मज्ञानी के दर्शन कर, मुझे निर्णय कराओं। तो मेरे प्यारे ऋषिवर! महाराजा ज्ञानश्रुति के महामन्त्री ने आज्ञा पाते ही, मुनिवरो! देखो, भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। ऐसा कहा जाता है, क्या, वह मन्त्री जी ने, मुनिवरो! देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड में सर्वत्र भूमण्डल पर भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया, अहा! जब भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया, मुनिवरो! देखो, अहा! पृथ्वी पर जब भ्रमण करने लगे, कहा जाता है नाना राजाओं के गृहों में, ऊँचे-ऊँचे भवनों में, उन्होंने दृष्टिपात किया, परन्तु उसे कहीं कोई ब्रह्मज्ञानी के दर्शन नहीं हो पाएँ भ्रमण करते हुये बेटा! देखो, नाना राजाओं के यहाँ, देखो, सुन्दर-सुन्दर जो द्रव्यपति थे, उनके गृहों में प्रविष्ट हुये, परन्तु

देखो, मन्त्री को, कोई ब्रह्मज्ञानी प्राप्त नहीं हुआ। अन्त में बेटा! भ्रमण करते हुये महाराज ज्ञानश्रुति के समीप आ पहुँचे, महाराजा ज्ञानश्रुति से कहा कि महाराज! मैंने तो सर्वत्र पृथ्वी पर भ्रमण किया है, भगवन्! मुझे किसी महापुरुष के दर्शन नहीं हुये। मुझे तो कोई ब्रह्मज्ञानी भी प्राप्त नहीं हुआ। उन्होंने कहा अरे! तुमने कहाँ-कहाँ भ्रमण किया है? उन्होंने कहा भगवन्! मैंने सर्वत्र राष्ट्र में भ्रमण किया है, जितने राष्ट्र हैं इस पृथ्वी पर, मानों देखो, मैंने नाना राजाओं के गृहों में प्रविष्ट हो करके, अहा! मुझे किसी ब्रह्मज्ञानी के दर्शन नहीं हुये। मुझे ऐसे जो भवनवेत्ता हैं, उनके गृहों में भी अपना वास किया है परन्तु वहाँ भी मुझे दर्शन न हुये।

ब्रह्मवेत्ता का वास

मुनिवरो! ज्ञानश्रुति ने कहा हे महामन्त्री! क्या, हे मन्त्री जी! यह ब्रह्मज्ञानी जो हैं, यह राजाओं के गृहों में प्रविष्ट नहीं होते, राष्ट्र गृहों में प्रविष्ट नहीं होते, ब्रह्मवेत्ता मानो ऊँचे-ऊँचे भवनों में नहीं होते। अहा! ब्रह्मवेत्ता तो देखो, भयङ्कर वनों में प्राप्त होने चाहिये। तुम उनके आसन पर जाओ, कहीं द्रव्यपति भी ब्रह्मवेत्ता बना करते हैं। देखो, द्रव्यपति तो वह ब्रह्मवेत्ता बनता है, जिसकी देखो, द्रव्य में किसी प्रकार की आस्था नहीं होती, मानो वह सदैव बेटा! वह उत्कृष्ट करता रहता है। देखो, रहा प्रकृतिवाद में रमण करते हुये, देखो, तुम्हें यह प्रतीत होगा, क्या यहाँ जितने भी राजा हुये हैं, परन्तु देखो, वह कितने ब्रह्मवेत्ता हुये हैं। अहा! देखो, निर्मोही हो गये हैं, परन्तु ब्रह्मवेत्ता होना बहुत ही असम्भव है। यह आज तुम ब्रह्मज्ञानी को दृष्टिपात करना चाहते हो, तो भयङ्कर वनों में चले जाओ।

मुनिवरो! देखो, मन्त्री जी ने उन वाक्यों का स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके बेटा! भ्रमण करते हुये वह भयङ्कर वनों में पहुँचे। मुनिवरो! देखो, महर्षि रेवक मुनि आश्रम में प्रविष्ट हो गये, महर्षि रेवक मुनि आश्रम में जब प्रविष्ट हुये तो गाड़ीवान रेवक अपनी गाड़ी के छाया में अपने जीवन को व्यतीत कर रहे थे। मुनिवरो! वह महामन्त्री जी उनके समीप पहुँचे, उनके हृदय ने यह उच्चारण कर दिया, कि यही ब्रह्मवेत्ता है, गाड़ीवान है, गाड़ी की छाया में ही विराजमान होता

है, नाना आश्रमों में मुनिवरो! ऋषि-मुनियों में महर्षि रेवक मुनि की यहाँ एक प्रतिष्ठा थी, आज उनके समीप पहुँचे। अहा! उनके समीप पहुँचे मुनिवरो! सबसे प्रथम मन ही मन में प्रणाम किया, और उनके चरणों को छू करके आसन पर ही मुनिवरो! देखो, उनकी प्रतिष्ठा जब अपने हृदय में प्रविष्ट हो गई, अहा! मन्त्री से महर्षि रेवक मुनि जी ने यह कहा आईये मन्त्री जी। मुनिवरो! देखो, मन्त्री जी विराजमान हो गये। महर्षि रेवक मुनि महाराज से ऋषि ने, ब्रह्म ब्रहा कृति मन्त्री जी ने कहा कहिये, भगवन्! क्या आप महर्षि रेवक हैं? उन्होंने कहा कि हे मन्त्री! मुझे महर्षि रेवक तो नहीं कहते, परन्तु गाड़ीवान रेवक हूँ। कितना सुन्दर शब्द है, बेटा! क्योंकि जो ब्रह्मवेत्ता होते हैं, बेटा! उनके द्वारा अभिमान भी नहीं होता, वह अपनी विद्या में, इतने पारायणवत् अपनी विद्या को दृष्टिपात नहीं कर पाते, मुनिवरो! देखो, वह ऋषि होते हुये, ब्रह्मवेत्ता होते हुये, ब्रह्मवेत्ता भी उच्चारण नहीं कर पाते, उनका हृदय कितना महान् होता है, पवित्रवत् होता है। मेरे प्यारे ऋषिवर! मुनिवरो! ऋषि ने कहा कि मैं तो गाड़ीवान रेवक हूँ। उन्होंने कहा महाराज! बहुत सुन्दर है। मुनिवरो! जब महामन्त्री ने यह अपने मन में दृष्टिपात कर लिया, और निश्चय कर लिया, कि यह ब्रह्मवेत्ता है। मुनिवरो! देखो, मन्त्री जी ने उनको नमस्कार करके वहाँ से प्रस्थान किया। भ्रमण करते हुये, वह महाराज ज्ञानश्रुति के समीप जा पहुँचे, और महाराज ज्ञानश्रुति से बोले कि महाराज! मुझे तो ब्रह्मवेत्ता के दर्शन हुये, मानो महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि आश्रम में प्रविष्ट हो जाओ।

महाराजा ज्ञानश्रुति का महर्षि रेवक मुनि आश्रम में प्रवेश

मुनिवरो! देखो, महाराजा ज्ञानश्रुति ने उन वाक्यों को स्वीकार कर लिया, स्वीकार करते हुये, उन्होंने बेटा! देखो, गृह को त्याग करके, नाना प्रकार की मानो देखो, मणियों से गुथी हुई मुद्राएँ और भी सुन्दर-सुन्दर कृत लेते हुये, द्रव्य लेते हुये, वहाँ से उन्होंने प्रस्थान कर लिया। भ्रमण करते हुये, वह महर्षि रेवक मुनि महाराज आश्रम में प्रवेश हुये। महर्षि रेवक मुनि महाराज ने कहा आईये, राजन्! आईये, ज्ञानश्रुति जी! ज्ञानश्रुति ने कहा भगवन्! मैं आपके लिये यह

तुच्छ सी भेंट लाया हूँ, यह आप स्वीकार कीजिये। उन्होंने कहा अरे! क्या, यह मेरे लिये है। उन्होंने कहा कि हाँ भगवन्! मुनिवरो! देखो, महर्षि रेवक ने, उसे शूद्र कहा, यह कहा अरे! शूद्र ये तुम क्या लाये हो? मुनिवरो! देखो, राजा ने अपने मन ही मन में यह निश्चय कर लिया, क्या यह द्रव्य कुछ सूक्ष्म है, क्योंकि यह महर्षि जी हैं, पवित्र हैं, महान् तपस्वी हैं, मानो यह द्रव्य उनके लिये कुछ नहीं है, इसीलिये मैं और द्रव्य को ले जाने के लिये जा रहा हूँ।

मुनिवरो! देखो, उन्होंने वहाँ से यह प्रस्थान कर लिया, भ्रमण करते हुये अपने राष्ट्र, गृह में प्रविष्ट हुये, अपनी धर्म देवी से बोले कि हे देवी! देखो, महर्षि रेवक ने मुझे शूद्र कहा है, मैं यह जो द्रव्य है, इनको अर्पित करना चाहता हूँ, परन्तु उसमें मुझे शुद्र कहा है। उन्होंने कहा तो महाराज! आप क्या चाहते हैं? मुनिवरो! देवी से कहा हे देवी! मुझे, मैं यह चाहता हूँ, क्या मैं ऋषि को प्रसन्न करना चाहता हूँ, और अपने को ब्रह्मवेत्ता बनाना चाहता हूँ। उन्होंने कहा तो प्रभु! कैसे उनको प्रसन्न करें? मेरी इच्छा यह है कि हमारे गृह में जो राज कन्या है, परन्तु राज कन्या को देखो, स्वर्ण के आभूषणों से सुशोभित करते हुये और स्वर्ण के रथ में अर्पित करके, ऋषि को अर्पित किया जाये। वह राजा ब्रह्मे पति राजा ब्रह्मे क्योंकि वह राजाओं के महाराजा हैं, क्योंकि ऋषि जो होते हैं, वह राजाओं के महाराजा होते हैं। इसीलिये मैं उनको राजा ही उच्चारण किया करता हूँ, उनको अर्पित किया जाये। उन्होंने कहा प्रभु! जैसी आपकी इच्छा हो।

मुनिवरो! देखो, उनकी पत्नी ने उन वाक्यों को स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपनी पुत्री को नाना प्रकार के आभूषणों से युक्त करते हुये अहा! उन्होंने बेटा! देखो, स्वर्ण के रथ पर स्थिर करते हुये, अपनी कन्या को बेटा! देखो, भ्रमण करते हुये, अश्वत को वहाँ से प्रस्थान कर दिया। भ्रमण करते हुये वह मुनिवरो! देखो, महर्षि रेवक मुनि आश्रम में प्रविष्ट हो गये, रेवक मुनि जी से महाराजा ज्ञानश्रुति ने कहा कि महाराज! आप के लिये यह भेंट अर्पित करना चाहता हूँ। महर्षि रेवक ने कहा अरे! शुद्र! यह तुम क्या ला रहे हो, जब यह वाक्य कहा तो ऋषि से कहा कि मैं और क्या लाता? मुनिवरो! देखो, सब को ऋषि के कथनानुसार

उस सब को राष्ट्र को देखो, प्रस्थान कर दिया, अपने गृह में प्रविष्ट हो गये। महामन्त्रियों के मध्य में विराजमान हो करके, विचार-विनिमय करने लगे, क्या मैं ऋषि के द्वारा ले करके जाऊँ। क्या, जो ऋषि मेरे से प्रसन्न हो जाये, और मुझे ब्रह्मज्ञान की प्रतिष्ठा कराएँ। उन्होंने, महामन्त्री ने कहा हे राजन्! तुम नहीं जानते, क्या ऋषि जो होते हैं, वह विवेकी शिष्य को ही महान् बनाया करते हैं। द्रव्य से ऋषि को प्रसन्न करना चाहते हो, मेरे विचार में यह आता है कि ऋषि द्रव्य से प्रसन्न नहीं होते। मुनिवरो! उन्होंने कहा, तब यहाँ से कोपीन धारण करके यहाँ से प्रस्थान कीजिए और उनके आश्रम में प्रविष्ट होईए।

मुनिवरो! देखो, मन्त्रियों के वाक्य को पान करते हुये महाराजा ज्ञानश्रुति ने बेटा! देखो, अपनी कोपीन को धारण करते हुये, अपने आश्रम को प्रस्थान कर लिया, भ्रमण करते हुये मुनिवरो! देखो, महर्षि रेवक मुनि आश्रम में प्रविष्ट हुये। महर्षि रेवक ने कहा आईये, आईये राजन्! आईये। मुनिवरो! देखो, विराजमान हो गये। महर्षि रेवक ने कहा कहिये, ज्ञानश्रुति जी! आप क्या चाहते हैं? उन्होंने कहा प्रभु! मैं यह चाहता हूँ क्या, जिस देवता की आपने उपासना की है, उस देवता का मैं उपदेश चाहता हूँ आपके द्वारा। उन्होंने कहा बहुत सुन्दर, मैं अति सन्तुष्ट हूँ, क्योंकि तुम त्याग और तपस्वी बन करके, मेरे आश्रम में प्रविष्ट हुये हो।

महर्षि रेवक मुनि महाराज का उपदेश

मेरे प्यारे ऋषिवर! देखो, महर्षि रेवक मुनि महाराज ने अहा! बोलो, ज्ञानश्रुति! जिस देवता की अब तक मैंने उपासना की है, उसी का नाम मृत्यु है। क्योंकि मृत्यु मेरा देवता है, आज मैं मृत्यु से विजय होना चाहता हूँ, उसी के लिये, उसी की मैं आराधना करता चला आया हूँ, अहा! देखो, मैंने यह निश्चय किया है कि मृत्यु से विजय होना है, संसार में यह मेरा देवता है, क्योंकि मृत्यु से विजय होना है, तो मृत्यु ही मेरा देवता है, और आप मृत्यु को ही जानना चाहते हैं क्योंकि उसी की मैंने उपासना की है। उन्होंने कहा महाराज! मुझे उपदेश दीजिये। उन्हें बेटा! नाना प्रमाण दे करके, उन्होंने कहा क्या, हे राजन्! तुम्हें यह प्रतीत है कि

महर्षि पिप्पलाद आश्रम में जो विवेचना हुई, मानो देखो, महर्षि भारद्वाज आश्रम में जो विवेचना हुई थी, वह भी तुम्हें प्रतीत होगी, देखो, महर्षि भारद्वाज आश्रम में एक समय महर्षि पुण्डरीकाक्ष ऋषि महाराज के समीप जब प्रविष्ट हुये, तो मानो देखो, उनके द्वारा प्रविष्ट होते ही महर्षि भारद्वाज ने यह कहा था, क्या, तुम क्या जानना चाहते हो? उन्होंने कहा कि महाराज! मैं मृत्यु के ऊपर उपदेश चाहता हूँ। महर्षि भारद्वाज ने कहा कि इसके ऊपर विचार-विनिमय किया जाये। मुनिवरो! देखो, महर्षि जमदग्नि और महर्षि रेवक इत्यादि ऋषि मुनियों का समाज था। देखो, उनका पदार्पण हुआ, और भी देखो, आदि आचार्य थे मानो देखो, इसमें महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज भी थे, विचार-विनिमय होने लगा, क्या मृत्यु क्या है? मृत्यु से विजय होने के लिये मानव सदैव प्रयास करता रहता है और मृत्यु के ऊपर जब ऋषि-मुनियों का विचार-विनिमय होने लगा, क्या मृत्यु क्या है? विचार आया, कि देखो, भई! महर्षि जमदग्नि ने कहा क्या मृत्यु ही संसार में भय है, क्योंकि मानव को भय नहीं हो सकता यदि मृत्यु ही न हो। उन्होंने कहा, महर्षि पिप्पलाद ने कहा मेरे विचार में तो यह आता है, क्या यह जो मृत्यु है, यह मानो एक मानव की कल्पना है, कल्पना मात्र है मृत्यु, मृत्यु कोई पदार्थ नहीं होता, क्योंकि मुझे तो मृत्यु कल्पना प्रतीत होती है। मेरे प्यारे ऋषिवर! इन वाक्यों पर चले हुये, वाक्य समाप्त हो गया अन्त में, देखो, सायंकाल हुआ, ऋषि-मुनियों ने अपने-अपने विचार दे करके, अहा! अपने-अपने आश्रम को उन्होंने प्रस्थान किया।

महर्षि पिप्पलाद मुनि का दिव्या से सम्वाद

जब महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज बेटा! जब अपने गृहों में प्रविष्ट हुये अपने आश्रम में बेटा! देखो, उनकी पत्नी बड़ी कष्टमय थी, महादुःखित हो रही थी। महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले देवी! तुम दुःखित क्यों हो? क्या कारण है? उन्होंने कहा प्रभु! मेरे सात वर्षीय पुत्र की मृत्यु हो गई। अहा! ऋषि ने कहा क्या देवी इसके ऊपर तो विचार-विनिमय हो रहा था, क्या मृत्यु कोई वस्तु नहीं होती, इसीलिये मृत्यु ही मेरे समीप नियुक्त की है, यह मेरे विचार में नहीं आ रहा है। उन्होंने कहा भगवन्! मैं क्या करूँ? मेरा पुत्र तो मृत्यु को अभी-अभी प्राप्त हुआ

है। मानो मैं अभी उसका दाह करके आई हूँ। मेरे विचार में तो ऐसा आता है कि मेरा पुत्र था, परन्तु मृत्यु को प्राप्त हो गया। ऋषि ने कहा देवी! संसार में मृत्यु एक कल्पना है, तुम कल्पना भरे शब्दों को, मेरे से उच्चारण कर रही हो, मेरे विचार में यह वाक्य नहीं आ रहा है।

शरीर परमाणुओं का समूह

मुनिवरो! देखो, महर्षि पिप्पलाद – उन्होंने कहा देवी! संसार में यह जो कल्पना है, यह केवल मन की कल्पना मात्र है, मानो इसमें कोई सार्थकता नहीं है, मृत्यु कोई वस्तु नहीं है। उन्होंने कहा भगवन्! यह मैं कैसे स्वीकार करूँ? यह जो मेरा शरीर है, यह जो आपको दृष्टिपात आ रहा है, यह क्या है? उन्होंने कहा यह परमाणुओं का समूह है, नाना प्रकार के परमाणुओं का समूह है। मानो पञ्चमहाभूतों के जो परमाणु होते हैं वही परमाणु एकाग्र हो जाते हैं, सुगठित हो जाते हैं और उन परमाणुओं को, परमाणुओं को सुगठित करने वाला मानो वह चैतन्य आत्मा है। यह आत्मा इसमें भास रहा है, मानो यह आत्मा ही, जो इस शरीर में विराजमान होने के नाते ही मानो देखो, शरीर भी क्रियाशील रहता है। इसी प्रकार देवी! मेरे विचार में तो यही आता है, क्या, यह जो हमारा शरीर है, यह नाना प्रकार के परमाणुओं से बना है। नाना प्रकार के परमाणुओं का समूह कहलाया गया है। उन्होंने कहा प्रभु! मैं यह जान नहीं पा रही हूँ क्या, यह जो मेरा मानव शरीर दृष्टिपात आ रहा है, जिसे आप परमाणुओं का समूह उच्चारण कर रहे हैं, मानो यह मैं जानना चाहती हूँ, जब मैं इस रूप में नहीं थी, जो आपको दृष्टिपात आ रहा है, इससे पूर्व यह परमाणु कहाँ रहते थे? जब मेरा शरीर, इस रूप में नहीं था, उन्होंने कहा यही परमाणु थे, जो माता के गर्भस्थल में विराजमान थे, माता के गर्भस्थल में इन परमाणुओं का मिलान हो रहा था, वह जो चैतन्य देव प्रभु है मानो देखो, जो संसार में सबसे महान् कलाकार है, सबसे महान् वैज्ञानिक है, और सबसे महान् उदार है, वह जो ब्रह्मवेत्ता मानो जिसे ब्रह्म कहते हैं, जो रचना कर रहा था, माता के शरीर में माता-पिता के गर्भस्थल में क्योंकि इन परमाणुओं की रचना हो रही थी। आत्मा इनमें प्रतिष्ठित हो करके,

मानो देखो, उससे निर्माण हुआ करता है। उन्होंने कहा प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ, मानो जब यह मेरा शरीर देखो, माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा था, परमाणुओं का माता के गर्भस्थल में, जब माता का गर्भाशय भी नहीं था, उससे पूर्व यह परमाणु कहाँ रहते थे? उन्होंने कहा देवी! यही परमाणु माता-पिता के रज वीर्य के रूप में विराजमान थे। क्योंकि देखो, इन परमाणुओं से ही मानो वीर पुरुष कहलाता है, ब्रह्मचारी कहलाता है, ओजस्वी कहलाता है, अग्नेय कहलाया जाता है, देवता कहलाया जाता है, मानव कहलाया जाता है। हे देवी! देखो, इन्हीं परमाणुओं से मानव महान् बना करता है, यह परमाणुओं की प्रतिष्ठा माता-पिता के रज वीर्य के रूप में हुआ करती है, संसार में जो मेधावी बन करके, प्रज्ञावी बन करके और ऋतम्भरावी बन करके परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

माता-पिता से पूर्व परमाणु

बेटा! ऋषि ने कहा हे देवी! देखो, वही परमाणु थे, जो पिता के सङ्ग में विराजमान थे, और माता के शरीर में रज रूप में, रस रूप में विराजमान थे, क्योंकि माता ब्रह्मचारिणी कहलाती है, ओजस्वी कहलाती है, महातपस्वी कहलाती है, गार्गी की भाँति कहलाती है। मेरे प्यारे ऋषिवर! जब यह वाक्य ऋषि ने वर्णन कराया, तो उन्होंने कहा, हे राजन्! मानों पिप्पलाद जी से कहा देवी ने, हे भगवन्! मैं यह जानना चाहती हूँ जब माता-पिता के शरीर में भी मानो माता-पिता का भी शरीर नहीं था, तो उससे पूर्व यह परमाणु कहाँ रहते थे? उन्होंने कहा यही परमाणु मानो कुछ अन्न में विराजमान थे, कुछ नाना प्रकार की वनस्पतियों में विराजमान थे, यही परमाणु थे, जो मानो देखो, अन्न को सुगठित बनाता है। अन्न को भी प्रगट करता है। मानो देखो, वनस्पति भी इसी से, उन्हीं परमाणुओं से सुगठित रहती हैं, इसीलिये, हे देवी! यह परमाणु देखो, कुछ अन्न में विराजमान थे, कुछ नाना प्रकार की वनस्पतियाँ में विराजमान थे।

उनकी पत्नी ने कहा मैं यह जानना और चाहती हूँ, मानो जब यह वनस्पति और अन्न भी नहीं था, उसके पूर्व यह परमाणु कहाँ रहते थे? उन्होंने

कहा यही परमाणु मानो देखो, यही परमाणु, जिससे शरीर बना हुआ है, देखो, कृषक की भूमि में ललाहित हो रहे थे। अहा! कृषक भूमि में उपज हो रहे थे, श्वंधन हो रहे थे। उन्होंने कहा भगवन्! जब यह कृषक की भूमि नहीं थी, उससे पूर्व यह परमाणु, यह परमाणु कहाँ थे? क्योंकि उसमें भी नहीं थे, अहा! ऋषि ने कहा देवी! यही परमाणु मानो पृथ्वी में बिखरे परमाणु थे, पृथ्वी में बिखरे हुये परमाणु थे। पृथ्वी में बिखरे हुये परमाणु ही आज तुम्हें यह प्रतीत हो रहे हैं। अहा! पृथ्वी में बिखरे हुये परमाणु, यह ही नहीं माना जा सकता, क्या पार्थिव तत्त्व ही हमारे यहाँ प्रधानता में परणित होता है। आचार्यों ने कहा है, इस मानव शरीर में बेटा! कुछ पृथ्वी के परमाणु होते हैं, कुछ अग्नि के परमाणु होते हैं, कुछ वायु के परमाणु होते हैं, कुछ जल के परमाणु होते हैं, कुछ अन्तरिक्ष परमाणु होते हैं, मानो पाँचो प्रकार के परमाणु, इस मानव शरीर में बेटा! भास रहे हैं। उन्हीं परमाणुओं से मानव का शरीर देखो, सुगठित रहता है, इसमें चैतन्य आत्मा विराज रही है, जिन परमाणुओं को सुगठित करता है।

परमाणुओं का परमाणुओं में विलय

उन्होंने कहा हे देवी! यह तुम्हें दृष्टिपात होगा, जिस मानव शरीर से यह अन्तरात्मा चैतन्य चला जाता है। अन्तरात्मा चला जाता है, उस समय तुम्हें यह प्रतीत है, क्या यह परमाणु कहाँ चले जाते हैं? अहा! उन्होंने कहा देवी! जब यह आत्मा चला जाता है, यह मानो देखो, अग्नि में दाह कर दिया जाता है। मानो उस शरीर का शव का उस समय देखो, वह अग्नि के परमाणु अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाते हैं, जल के परमाणु जल में प्रतिष्ठित हो जाते हैं, वायु के परमाणु वायु में प्रतिष्ठित हो जाते हैं, अहा! वह पृथ्वी के परमाणु पृथ्वी में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। हे देवी! संसार में देखो, जो पाँचों प्रकार के जो परमाणु हैं, पाँचों में लय हो जाते हैं, और आत्मा चैतन्य वह भी किसी काल में नष्ट नहीं होता। न तो परमाणुवाद ही विनाशता को प्राप्त होता है, और न आत्मा ही विनाशता को प्राप्त होता है। यह तुम्हें अज्ञानता कैसे आ जाती है कि मेरा पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है।

मृत्यु का भय

आज तुम्हें यह प्रतीत है कि मृत्यु कोई वस्तु नहीं होती मानो देखो, यह तो तुम्हें निर्णय हो गया होगा क्या मृत्यु केवल क्या है? आज यह विचार-विनिमय प्रत्येक मानव को कर लेना चाहिये, कि मृत्यु है क्या? ऋषि ने कहा है हे राजन्! मृत्यु उसे कहा जाता है जो संसार में मानो अन्धकार बन करके रहता है। संसार में जो भयभीत रहता है, जो पाप कर्म करता है, जो अपने पापों से भयभीत रहता है, वही मानो मृत्यु को प्राप्त होते रहते हैं, अहा! जो मानव सदैव निर्भयवत् को प्राप्त हो जाते हैं। जो ब्रह्मवेत्ता बना करते हैं ब्रह्म के ऊपर जिनका चिन्तन रहता है। मानव शरीर के ऊपर जिनका चिन्तन रहता है, जो अपनी इन्द्रियों का, इन्द्रियों के विषयों की सामग्री बना करके, यज्ञशाला में हुत करते हैं, उन्हें बेटा! मृत्यु का भय नहीं होता, मृत्यु का भय किन्हें होता है? मृत्यु उनको निगलती है, जो बेटा! देखो, उस आवागमन के सदैव चक्र में रहते हैं, आवागमन की प्रतिभा में रमण करते रहते हैं।

आज यह विचारना है मानो देखो, वह जो आवागमन है, अप्रत कहलाया जाता है। परन्तु यह ज्ञान में रहने वाला है, ज्ञान स्वरूप कहलाया जाता है, मेरे प्यारे ऋषिवर! आत्मा में अल्पज्ञता अवश्य रहती है परन्तु देखो, इसमें ज्ञान का प्रकाश सदैव होता है, ज्ञान और प्रयत्न इसका स्वाभाविक गुण होता है, जो मैंने किसी काल में बेटा! मैंने वर्णन भी कराया है। आज मैं उस विवेचना में अधिक जाना नहीं चाहता हूँ। वैज्ञानिक क्या कह रहा है, ब्रह्मचारी कहता है, क्या मैं मृत्यु से विजय होना चाहता हूँ, क्योंकि वह मृत्यु से क्यों विजय होना चाहता है? क्योंकि ब्रह्मचारी उसे कहते हैं, जो ब्रह्मचर्यवत् हो जाता है। जिसका ब्रह्मचर्य ही मानो देखो, ब्रह्म में जिसका मिलान हो जाता है, ब्रह्मचारी उसे कहते हैं, जिसका मुनिवरो! देखो, ब्रह्म से जिसकी सुगठिता हो जाती है अहा! ब्रह्म से सहकारिता हो जाती है, ब्रह्म से उसका मिलन हो जाता है, बेटा! वही तो मानव संसार में बेटा! मृत्यु से पार हो सकेगा।

मानव को उद्‌बोधन

मेरे प्यारे ऋषिवर! आचार्योंजनों ने बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है, ऋषि-मुनियों ने कहा है, मुझे तो बेटा! स्मरण आता रहता है, जब महाराजा इन्द्र बेटा! देखो, महाराजा प्रजापति आश्रम में पहुँचे थे, वहाँ उन्होंने बेटा! तप किया, कैसा तप किया, ब्रह्मचर्य अहा! आचार्य ने कहा हे इन्द्र! तुम बत्तीस वर्ष मेरे आश्रम में तप करो, कहा जाता है, इन्द्र ने इसी प्रकार देखो, एक सौ एक वर्ष की तपस्या की, तपस्या के पश्चात् ब्रह्मवेत्ता बनने के लिये देखो, व्रत हो गये। इसीलिये आज हमें विचारना है, क्या हम स्वयं तपस्वी बनें, विचारवान् बनें और देखो, मृत्यु से विजय होने का प्रयास करना है। देखो, ब्रह्मवेत्ता बनने के लिये, सदैव मानव को तत्पर रहना चाहिये। बेटा! यह तो मैंने बहुत पूर्व काल में अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा था कि मानव को विचारना है, क्या हम सदैव संसार में क्यों आते हैं? विचार-विनिमय करने के लिये आते हैं, मानव बनने के लिये आते हैं, देवता बनने के लिये आते हैं, बेटा! मुनिवरो! देखो, देवता बनने के लिये और मानव बनने के लिये मुनिवरो! देखो, **मननशील को मानव कहते हैं।** और देवत्त्व उसे कहा है – देवता उसे कहा जाता है, बेटा! जो अपनी प्रवृत्तियों पर बेटा! संयम कर लेता है। अपनी इन्द्रियों का दमन कर लेता है, कैसा दमन? क्या उसकी इन्द्रियाँ बिखरी हुई नहीं होती। वे देवता कहलाया जाता है, और जो मननशील होता है, उसको मानव कहा जाता है।

बेटा! मैं अधिक विचार देने नहीं आया हूँ, केवल सूक्ष्म-सा परिचय देने चला आता हूँ। सूक्ष्म-सा मैंने यह परिचय दिया है, आज मानव को मृत्यु से पार होना है। बेटा! मृत्यु है क्या? विचारना यह है प्रत्येक मानव को बेटा! मृत्यु वह होती है, जो मुनिवरो! देखो, काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह के सदैव बेटा! इनमें भी यही प्रवृत्तियाँ रमण करती रहती हैं वही मानव संसार में बेटा! मृत्यु को प्राप्त होते हैं। और जो इनके उपराम इनकी प्रवृत्तियाँ हो जाती हैं उनको बेटा! मृत्यु नहीं छुआ करती है। वह मृत्यु को अपने नीचे दमन कर लेते हैं और वह निगल जाते हैं, स्वयं निगल जाते हैं मृत्यु को और मुनिवरो! मृत्यु उनको नहीं छुआ

करती है। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्य, आज मैं अधिक चर्चा करने नहीं आया, केवल सूक्ष्म-सा वाक्य मैंने तुम्हें प्रगट कराया है, क्या, आज हमें मृत्यु से पार होना है।

महाराज महर्षि पिप्पलाद आदि आचार्यों ने बेटा! जो विवरण दिये हैं, वह मैंने संक्षिप्त में परिचय कराते हुये मैंने कहा है। महाराज रेवक मुनि ने कहा हे ज्ञानश्रुति! आज तुम्हें ब्रह्मवेत्ता बनना है तो मेरा जो देवता है वह मृत्यु है, आज मृत्यु से तुम्हें विजय होना है। तो आज तुम देखो, मृत्यु के स्वरूप को जान लो, कि मृत्यु है क्या? संसार में किसी वस्तु का विनाश नहीं होता, क्योंकि अज्ञानता जो मानव संसार में मानो देखो, संसार में जितना भी कष्ट है, एक मेरी प्यारी माता सदैव मानो कष्ट में रहती है, कहीं देखो, पुत्र का वियोग है, कही पति का वियोग है, नाना प्रकार के वियोग में मेरी प्यारी माता संलग्न रहती है। क्योंकि उसमें अभी ज्ञान नहीं है, अज्ञानता है, क्योंकि अज्ञानता में कल्पना करता है, मानव और जब अज्ञान नहीं होता तो मुनिवरो! मानव कल्पना से रहित हो जाता है। उस मानव के द्वारा कल्पना नहीं रह पाती।

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज का हमारा वाक्य क्या कह रहा है? क्या हम सदैव उस महान् आनन्दमयी उस महान् प्रभु को जानने वाले बनें और उसका चिन्तन करने वाले बनें। परन्तु देखो, अपने को तपस्वी बनायें, उज्ज्वल बनायें, और मृत्यु से पार होने का प्रयास करते चले जायें। मेरे प्यारे ऋषिवर! वही मानव मृत्यु से पार होता है जो मानव अपने कर्त्तव्य में संलग्न रहता है, कर्त्तव्य का पालन करता है। कर्त्तव्यवादी को बेटा! भय नहीं होता, कर्त्तव्यवादी की मृत्यु नहीं होती।

परमपिता परमात्मा का राष्ट्र

मुनिवरो! देखो, जो अपने-अपने कार्य में संलग्न होता है, मेरी पवित्र माता, जो अपना, उसे आत्मविश्वास होता है, क्या तुझे संसार में कणाद और गौतम को जन्म देना है, मानो देखो, यहाँ व्यास और पतञ्जलि को जन्म देना है, देखो, कृष्ण और भगवान् राम को जन्म देना है। जिससे यह संसार मानो वैज्ञानिकता में

परणित हो जाये, आध्यात्मिक विज्ञान और दोनों में पारङ्गत होते हुये, हम इस संसार सागर से पार हो जायें। वह मानव के लिये कितना लाभप्रद है, कितना लाभ देते हैं, क्या वह जो पृथ्वी विष उगलती है उसको बेटा! देखो, समुद्र के प्राणी अपने में शोषण कर लेते हैं, अपने में ग्रहण कर लेते हैं। मानव जब क्रोध करता है, नाना प्रकार का विष उगलता है, उस विष को बेटा! देखो, इस पृथ्वी के विचरण करने वाले बेटा! सर्पराज जैसे मुनिवरो! और भी विषैले प्राणी, उस विष को अपने में धारण कर लेते हैं। हे मानव! यह नाना प्रकार की योनि, तेरे लिये कितनी लाभदायक हैं, और यह प्रभु ने एक-दूसरे प्राणी के कितना निकटतम यह जीवन बनाया है, इसके ऊपर भी तो विचार-विनिमय करना है। यह भी अनुसन्धान करना है कि परमात्मा का विज्ञान कितना महान् है, क्या, परमात्मा के विज्ञान से हम जब विचार-विनिमय करेंगे, क्या हमें यह वास्तव में अनुभव होगा कि हम वास्तव में देखो, परमात्मा की सृष्टि में हैं, परमात्मा के राष्ट्र में हैं, अपने को, हम जब प्रकाश में ही दृष्टिपात करते हैं। तो बेटा! देखो, हमारा जीवन प्रकाश ही प्रकाश में रमण करने लगता है।

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज का हमारा वाक्य क्या कह रहा है, हम वास्तव में उस महामना प्रभु की याचना करते हुये जो संसार में देखो, माता हो, जन्म देने वाली हो, वसुन्धरा है जिसके गर्भ में बेटा! हम सब वशीभूत हो रहे हैं। उस माता वसुन्धरा के लिये हम सदैव याचना करते रहें, प्रभु का बेटा! गुणगान गाते रहें, यह है बेटा! आज का हमारा वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, तो शेष चर्चायें बेटा! कल प्रगट करूँगा। मुनिवरो! देखो, महर्षि रेवक मुनि की चर्चा दोनों का देखो, ज्ञान और विज्ञान की विवेचना चलती रही, क्योंकि मृत्यु ही महर्षि रेवक मुनि का देवता मृत्यु था। अहा! मृत्यु के ऊपर दोंनो का विचार-विनिमय चलता रहा। बेटा! यह आज का वाक्य अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा तो आध्यात्मिकवाद पर विवेचना कल प्रगट कर सकेंगे।

आज के वाक्यों का अभिप्रायः ये कि प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्याएँ, प्रत्येक ऋषि मण्डल, मुनिवरो! देखो, परमात्मा के राष्ट्र में आये हैं,

परमात्मा की उपासना करना, उसको अपना देव स्वीकार करना, मानो उसके ज्ञान और विज्ञान को विचार-विनिमय करना, बेटा! यह हमारा सबसे उत्तम कर्त्तव्य है। अपने उदर की पूर्ति भी हमें करनी है, उसे भी करना चाहिये, परन्तु देखो, वह **आत्मा का जो भोजन है, ज्ञान है, विवेक है,** उसके ऊपर भी मानव का अध्ययन होना चाहिये। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्य, अब मुझे समय मिलेगा, तो शेष चर्चायें बेटा! कल प्रगट कर सकूँगा। अब वेदों का पठन-पाठन।

वेद पाठ .....

महर्षि महानन्द मुनि जी–अच्छा भगवन्!
पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्दित रहो!

दिनाँक : 19 सितम्बर, 1969

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गुणगान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि वेबसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

चरित्र का स्त्रोत

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, वह सुन्दर मानवता से सुगठित विचार जो हमारे आचार्यों के निमत हमें प्राप्त हुआ है जैसा हमने कई काल में प्रगट कराते हुये कहा था कि हमारा जीवन, हमारी मानवता उस परमपिता परमात्मा से सुगठित रहती है जो परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञान का स्त्रोत कहा गया है क्योंकि जितना भी, वह भौतिकवाद का हो, आध्यात्मिकवाद हो, अथवा विज्ञान है, ज्ञान है, परन्तु वह सब उस परमपिता परमात्मा से ही सुगठित रहता है। क्योंकि परमात्मा वह जो परब्रह्म परमात्मा है, मानो कृत है, जो मानव को जानने के योग्य है। जो मुनिवरो! स्वयं प्रकाश में रमण करने वाला है, उसके राष्ट्र में विचार नहीं होता, आज हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाने के लिये तत्पर हैं। क्योंकि मानव का जीवन जो उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा से सुगठित रहता है। मानव को कुविचार बनाने का अधिकार ही नहीं हैं, क्योंकि संसार में जो भी मानव कुविचार बनाता है, वह ऐसा उसके जीवन में आता है – वह परमपिता परमात्मा जो चैतन्य स्वरूप है, जो मुनिवरो! देखो, शुद्ध-बुद्ध है, हम उस परमपिता परमात्मा को अपने से दूरी कर देते हैं। यदि परमात्मा को हम अपने से दूरी न करें, तो हमें इस संसार में, तो मुनिवरो! कुविचार लाने का संसार में प्रसङ्ग ही उत्पन्न नहीं होता। परन्तु जब हमारा विचार यह कहता है, वेद का ऋषि क्या कहा रहा है भिन्न-भिन्न समय में वेद के आचार्यों ने बेटा! नाना प्रकार की विवेचना, इस सम्बन्ध में प्रगट की हैं। आज मैं अधिक विवेचनाओं को तो नहीं दे पाऊँगा, परन्तु सूक्ष्म-सा परिचय कराना चाहता हूँ, कि **मानव का**

जीवन चरित्र से ही स्थूल रूप होता है, जिस मानव के द्वारा बेटा! चरित्र नहीं होता, उसके द्वारा मानवता भी नहीं होती, और जब मानवता नहीं होती, तो बेटा! उस मानव की पशु संज्ञा होती है। पशुवत कहलाया गया है।

मानव जीवन

आओ, मेरे प्यारे ऋषिवर! आज हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुये – मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे कई काल में प्रगट कराते हुये कहा कि **संसार में मानवता की सदैव आवश्यकता रहती है।** परन्तु देखो, मानव का निर्माण, **मानव का निर्माण उसके विचारों से होता है,** उसके विचारों में सुगठिता रहती है, और विचार उसके हृदय में स्थित होते हैं, परन्तु हृदय में निर्मलता हो और शुद्धता होनी चाहिये जिससे बेटा! हम इस संसार सागर में ऊँचे-ऊँचे कार्य करने में सफलता को प्राप्त हों, क्योंकि मानव इस संसार में निराशा के लिये उत्पन्न नहीं होता है। वह सदैव मुनिवरो! देखो, आशावादी बनने के लिये आता है, और उसके जीवन में एक उल्लास होता है, कर्म करने की एक वेदना होती है, परन्तु वह कर्म करने की उसमें एक महान् सत्ता होनी चाहिये, और उसमें इतनी गति होनी चाहिये, क्या वह मुनिवरो! देखो, उस संसार की प्रतिभा को जानने में सफलता को प्राप्त हो जाये।

चरित्र की मीमांसा

आओ, मेरे प्यारे ऋषिवर! नाना आचार्यों का जीवन मुझे यहाँ बेटा! स्मरण आता रहता है, जिनके जीवन में महानता इतनी ओत-प्रोत रहती थी, परन्तु जीवन मानव का मुनिवरो! देखो, बिना चरित्र के ऊँचा नहीं बनता। वेद का ऋषि कहता है एक समय बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय आदित्य मुनि जी ने कहा था, वायु मुनि महाराज से, क्या महाराज! वेदं ब्रह्मे सुतानां आपका जो वेदज्ञ प्रकाश है इसमें मानव के लिये क्या उपदेश दिया है? उस समय महर्षि वायु जी ने कहा, आदित्य जी से कहा महाराज! वेद का वचन यह कह रहा है कि **मानव को संसार में चरित्रवत रहना चाहिये।** क्योंकि **मानव के द्वारा, चरित्र ही एक देन है प्रभु की, जिसमें महान् इस संसार**

सागर से हम पार हो सकते हैं। परन्तु चरित्र की प्रतिभा क्या है आचार्य ने कहा है? आदित्य जी ने कहा है कि चरित्र की मीमांसा क्या है, मुनिवरो! यह केवल वायु मुनि महाराज का ही वचन नहीं है, एक समय बेटा! ज्ञानश्रुति ने भी महर्षि रेवक से भी यह कहा था कि चरित्र की मीमांसा क्या है? परन्तु आचार्य ने चरित्र की मीमांसा करते हुये – पिप्पलाद मुनि के समीप इस प्रकार के प्रश्न आते रहे हैं। हमारे यहाँ परम्परा से ही, बेटा! चरित्र के ऊपर परम्परागत से ही बड़ा ही बल दिया जाता है। परन्तु आज हम केवल वायु मुनि महाराज के ऊपर टिप्पणी तो करना नहीं चाहते, उनके विचारों की पुनरुक्ति करना चाहते हैं। महर्षि वायु जी ने कहा था, कि वास्तव में तो हम यह विचारते हैं, कि चरित्र की मीमांसा क्या है? चरित्र की मीमांसा करते हुये महर्षि वायु जी ने कहा, हे आदित्य जी! चरित्र की मीमांसा तो सबसे प्रथम तो वही है, आज **वही मानव यथार्थ चरित्रवान होता है, जो परमात्मा को अपने से दूरी नहीं करता।** क्योंकि जो मानव परमात्मा से अपने को दूरी कर देता है, उसमें नाना प्रकार के अवगुण आ ही जाते हैं। वह दुराचार के उस महान् आक्रमण से देखो, स्थिर नहीं होगा क्योंकि उसने परमात्मा जो महान् चरित्रवत है। जिसके गर्भ में चरित्र समाहित हो जाता है, बेटा! देखो, वह जो परमपिता परमात्मा आनन्दमयी स्त्रोत है, बेटा! देखो, उसको हम अपने से दूरी करने से, हमारे जीवन में सार्थिकता नहीं आ पाती।

परमात्मा से दूरी में दोष

वेद के आचार्यों ने कहा है कि हम परमात्मा को अपने से दूरी कर देते हैं, सबसे प्रथम देखो मुनिवरो! मानव को अचरित्र होना यही हमें सिद्ध करता है, क्योंकि उससे नाना प्रकार के अवगुण हमारे समीप आ जाते हैं – काम आ जाता है, क्रोध आ जाता है, उसके पश्चात् काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह इत्यादि, यह जो नाना प्रकार के अतिता में परणित हो जाते हैं, क्योंकि संसार में बिना मोह के तो मानव का शरीर भी सुगठित नहीं होता, मानव के शरीर का निर्माण भी नहीं हो पाता, परन्तु उसे मोह में सीमावत कहा जाता है। इतना मानव को,

जितना वास्तव में आवश्यकता हो, इसको मोह नहीं, इसको कर्त्तव्यवाद में परणित कर दिया जाता है। परन्तु जहाँ देखो, अति हो जाती है, अति हो जाना ही मानव की मृत्यु कहा जाता है। क्योंकि किसी भी वस्तु की अति हो जाना, मानव की मृत्यु के समीप पहुँच जाना है। मृत्यु के निकट जाना है, उस मानव को बेटा! मृत्यु ऐसे निगल जाती है, जैसे सायंकाल के सूर्य को रात्रि अपने में धारण कर लेती है। इसी प्रकार बेटा! जब हम विचार-विनिमय करने लगते हैं कि हमारी कोई चरित्र की मीमांसा है, वह केवल इसी में परणित नहीं रहती, केवल हम प्रव्हा सुतं मम ब्रह्मचर्यतव प्रव्हा मुनिवरो! देखो, ब्रह्मचारी उसे कहा जाता है, आदित्य मुनि महाराज के शब्दों में जो मुनिवरो! देखो, ब्रह्मवाचप्रव्हा जो ब्रह्म में विचरण करता रहता है। **हम सदैव अपने प्रभु को, अपने समीप लाने का प्रयास करें।** यह हमारा सबसे ऊँचा चरित्रवान बनना है, परन्तु जब हम अचरित्रवादी बन जाते हैं, तो परमात्मा को अपने से दूरी कर देते हैं, और जहाँ परमात्मा विमुख हो जाता है, वहाँ मानो कर्त्तव्य पारायणता नहीं रहती, और जहाँ कर्त्तव्य परायणता नहीं रहती, वहाँ बेटा! मानव चरित्र की भी सुरक्षा नहीं कर पाता।

वास्तविक भूषण

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज हम अपने मानवत्व को विचार-विनिमय करते हुये इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। क्योंकि हमारा जीवन चरित्र से सुगठित होना चाहिये, **चरित्र ही मानव का वास्तविक भूषण है।** मेरे आचार्य परम्परा से एक वाक्य प्रगट करते चले आये हैं कि मेरी माता का जो सुन्दर आभूषण होता है, वह उसका चरित्र है। मानव की प्रत्येक इन्द्रियाँ बेटा! ब्रह्म का प्रवाह और उसके पश्चात् उसके चरित्र प्रतिभा उसके निर्माण होने से बेटा! सुगन्धि स्वतः ही उत्पन्न होने लगती है। **संसार में मानव सुगन्धि को उत्पन्न करने के लिये आता है,** सुगन्धिवत् इस संसार को दुर्गन्धिवत् करने नहीं आता, सुगन्धि देने के लिये आता है, और सुगन्धि संसार में अपने को शोषण करने के लिये आता है। परन्तु जब सुगन्धिवत् मानव बन जाता है,

मानव की सुगन्धि क्या है, मानव की प्रत्येक इन्द्रियों में जब विचार-विनिमय करोंगे। इन्द्रियों में क्या है वास्तव में बेटा! यदि यथार्थ रूप से, उसके द्वार पर जाओंगे, तो तुम्हें धर्म प्रतीत होगा। परन्तु यदि भौतिकवाद में जाओंगे, तो तुम्हें और कुछ प्रतीत होगा, परन्तु और भी घनिष्ठता में जाओंगे, तो मल मूत्रों से मुनिवरो! प्रत्येक इन्द्रियों में नाना प्रकार के देखो, नाना कृतियों में अहा! दुर्गन्धता में परणित रहता है मानव। परन्तु मानव की यह जो दुर्गन्ध है, वह वास्तविक, वह तथ्यवादी दुर्गन्ध नहीं होती। परन्तु वह जो देखो, सुगन्ध देना है, मानव देखो, सुगन्धता में जब मानव अपने विचारों की सुगन्धि देता है। नाना इन्द्रियों को सयंम में बनाता है। विचार देता है, कैसे विचार? सुन्दर विचार, सुगन्धिवत् विचार। जैसे मुनिवरो! देखो, सुगन्धि अहा! गृह को पवित्र बना देती है इसी प्रकार मानव के विचार, मानव का जो शरीर रूपी जो गृह है, इसको स्वतः पवित्र बनाते चले जाते हैं बेटा!

पूज्यपाद-गुरुदेव का आश्रम

मुझे स्मरण आता रहता है, जब मुझे ये संसार स्मरण आने लगता है, तो आश्चर्यजनक प्रतीत होने लगता है। मुझे स्मरण है बेटा! वह भी समय स्मरण है जब मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव के आश्रम में ओत-प्रोत होता था। पूज्यपाद-गुरुदेव के द्वारा जब मैं परणित हो जाता था, तो मुनिवरो! देखो, एक पंक्ति में शिष्यगण विराजमान रहते, द्वितीय पंक्ति में मेरी पवित्र माताएँ, और तृतीय पंक्ति में मार्ग से मृगराज आते, वह भी उसी पंक्ति में विराजमान हो जाते। कैसा सुन्दर समय बेटा! मुझे स्मरण है, मैंने एक समय अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से कहा प्रभु! यह मानो देखो, क्या है, जो मृगराज है, हिंसक प्राणी है, ये मानव का भक्षण कर जाते हैं परन्तु आपके चरणों में ओत-प्रोत हैं। उस समय मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव ने एक वाक्य कहा था हे पुत्रवत ये तुम्हें प्रतीत है कि मानव को, जो विचारों में अहिंसा परमोधर्म चरित्र की सुगन्धि आ जाती है, उस समय मानो देखो, यह सब प्राणी भी प्रभावित हो जाता है। वह भी अपने हिंसा को त्याग करके, अहिंसा परमोधर्म में परणित हो जाता है।

ब्रह्म की प्रतिभा

मेरे प्यारे ऋषिवर! वह समय मुझे स्मरण आता रहता है। परन्तु जहाँ उद्गाता उद्गान गाते रहते थे, मुझे स्मरण है बेटा! महर्षि भारद्वाज आश्रम में जब देखो मुनिवरो! वह गान गाते थे, मग्नता से, आत्मा से आत्मा परमात्मा की दोनों की सन्धि करते, दोनों के गान का तारतम्य कर देते थे पक्षीगण मौन हो जाते थे राजा का सम्पत्ति पर मोह नहीं रहता। तो मानव के भी विचार हैं, वह मानव के चरित्र की सुन्दर सुगन्धि है, क्योंकि **मानव में चरित्र उस काल में आता है जब कि वह परमात्मा को अपना लेता है।** परमात्मा को अपने समीप धारण कर लेता है, बेटा! वह धारण करने का नाम इसका महान् चरित्र बन जाना है। एक मानव राष्ट्रीयवत् उच्चारण करने लगता है, राष्ट्रीयवत् बनता है। परन्तु राजा को भी यह चाहिये, कि मैं परमात्मा को अपने समष्टि रूपों से प्रविष्ट कर लेना चाहिये। क्योंकि देखो, जब परमात्मा को अपने में धारण कर लेता है, तो बेटा! वह प्रजा का सेवक नम्र होता है, क्योंकि संसार में हम यही विचार-विनिमय करते हैं, तो संसार में सबसे नम्र, सबसे महान, वे परमपिता परमात्मा है। सबसे महान् सेवक है, यदि टिप्पणी कुछ करना चाहते हैं, कि आज हमें सेवक बनना है, आज हमें स्वामी बनना है, परमात्मा देखो, संसार में बेटा! देखो, सबसे ऊँचा स्वामी है, और सबसे ही मुनिवरो! देखो, सबसे ऊँचा सेवक भी उसको उच्चारण कर सकते हैं। परन्तु स्वामी और सेवक दोनों ही प्रभु बन करके, बेटा! संसार में जितनी ऊँची प्रतिभा तुम्हें प्रतीत हो रही है, यह प्रकृति चैतन्यवत् में तुम्हें दृष्टिपात आ रही हैं। बेटा! चन्द्रमा नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर हैं, प्रभु के मण्डल में, बेटा! एक-दूसरे मण्डल से, एक-दूसरे मण्डल का मिलान नहीं हो पाता। परन्तु वह क्या है? उस मेरे चैतन्य ब्रह्म की ही तो प्रतिभा है, उस ब्रह्म की ही प्रतिभा हमें प्रतीत हो रही है परन्तु इसीलिये एक दूसरा लोक, एक दूसरा लोक दूसरे लोकों से मिलान नहीं कर पाता, यदि एक दूसरा मण्डल, एक-दूसरे मण्डल से सुगठित हो जाये, तो बेटा! देखो, संसार में त्राहि-त्राहि हो सकती है। परन्तु देखो, वह हो नहीं पाता, क्यों नहीं हो पा सकता? क्योंकि परमात्मा अनन्तता में परणित रहता है, वह संसार में इतना महान् है, क्या उसकी महानता का वर्णन नहीं किया जाता। इसी प्रकार बेटा! जब मानव उसकी

महानता में अपने को सुगठित कर देता है, अपने को मुनिवरो! देखो, पिरो देता है, जैसे माला के मनके होते हैं, परन्तु देखो, मनके धागे में पिरोए होते हैं, माला कहलायी जाती है। इसी प्रकार बेटा! जब हम परमपिता परमात्मा को अपने धागे का सूक्ष्म तार करके, प्रत्येक इन्द्रियाँ उसमें सुगठित हो जाती हैं, मनके सदृश्य तो बेटा! मानव अपने में महान् सुन्दर और महान् बन जाता है।

चरित्र के लिये राष्ट्र

मेरे प्यारे! मैं अधिक विवेचना नहीं करने जा रहा हूँ। ऋषिवर! यहाँ केवल उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि हमें आज राजा को भी विचारना है, क्या तुझे चरित्र को लाना है संसार में, क्योंकि **राष्ट्र का जो निर्माण होता है, वह केवल चरित्र को लाने के लिये हुआ करता है,** जैसे राष्ट्र का निर्माण मुनिवरो! देखो, दुराचार के लिये नहीं होता, अपने ऐश्वर्य के लिये नहीं होता। राष्ट्र का जो निर्माण होता है, चुनाव होता है, वह केवल देखो, वह संसार को देखो, धर्म पारायण बनाने के लिये हुआ करता है, जब प्रत्येक मेरा प्यारा ऋषि मण्डल, प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या, जब चरित्र में परणित हो जाते हैं, तो बेटा! राजा के राष्ट्र में तो सुगन्धि उत्पन्न होने लगती है। और उस राजा के राष्ट्र में, जब सुगन्धि आने लगती है, तो बेटा! देखो, दूसरे राष्ट्र में अनुसरण करते हैं, अनुसरण करते हुये मानो देखो, उसके राष्ट्र के विधान को, परम्परागतों से ही अपनाना प्रारम्भ कर देते हैं। बेटा! इस सम्बन्ध में मुझे एक वार्त्ता स्मरण आती चली जा रही है, यह मैंने कई काल में प्रगट करते हुये भी कहा है।

राजा रावण को अशान्ति

आज भी मुझे स्मरण आती चली जा रही है बेटा! त्रेता के काल की, त्रेता के काल में जब मुनिवरो! देखो, महाराजा रावण लङ्का में राज करते थे, तो उनका जीवन वास्तव में बड़ा सुन्दर था। तो मुनिवरो! देखो, उनके राष्ट्र में विज्ञान भी महान् था, क्योंकि भौतिकवाद में राजा रावण का राष्ट्र बेटा! बहुत ही पारङ्गत रहा। मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! देखो, एक समय राजा रावण देखो, किसी विज्ञान की ग्रन्थि थी, परन्तु वह स्पष्ट नहीं हो पा रही थी। जब वह उसमें

परणित हो रहे थे तो उसके मस्तिष्क में अशान्ति आ गई, अशान्ति आ जाने के पश्चात्, राजा रावण ने अपने मन्त्रियों से कहा हे मन्त्रिगणो! मैं तो मार्ग में भ्रमण करने जा रहा हूँ क्योंकि मेरी आत्मा में शान्ति नहीं हो पा रही है। मैं आत्म शान्ति के लिये अहा! राष्ट्र को त्याग रहा हूँ, आत्म शान्ति प्राप्त करने के लिये तो मुनिवरो! देखो, राजा रावण ने अहा! राष्ट्र को त्याग दिया, मन्त्रियों को अपना राष्ट्र परणित कर दिया, और वह भयङ्कर वन को भ्रमण करने के लिये उन्होंने प्रस्थान कर लिया। भ्रमण करते हुये, बेटा! वह भयङ्कर वनों में नाना ऋषि-मुनियों के दर्शन करते हुये, वह महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज द्वारा जा पहुँचे। क्योंकि महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज, बेटा! देखो, महर्षि अङ्गिरा ऋषि महाराज के बेटा! एक हजारवें पड़पौत्र कहलाये जाते थे। बेटा! देखो, महर्षि कुक्कुट मुनि आश्रम में जब वह प्रविष्ट हुये, तो महर्षि कुक्कुट जी ने उनका बड़ा आदर किया, और कहा आईये भगवन्! पधारिये। राजा रावण ने उनके चरणों का स्पर्श किया और विराजमान हो गये, और विराजमान हो करके, विचार-विनिमय होने लगा। जब विचार-विनिमय होने लगा, तो बेटा! देखो, उनकी तपस्या उनकी मानवीयता से, उनके चरित्रवत् से देखो, राजा रावण का मन बड़ा ही प्रभावित हुआ, और प्रभावित हो करके राजा रावण ने नम्रतापूर्वक कहा प्रभु! मेरी ऐसी इच्छा है कि आप मेरी लङ्का का भ्रमण कीजिये। उस समय ऋषि ने कहा हे रावण! मुझे इतना समय, मुझे इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है क्या मैं तुम्हारी लङ्का भ्रमण कर सकूँ। क्योंकि तुम्हारी लङ्का में जाने का इतना समय नहीं, क्योंकि मैं प्रभु को अपने में संलग्न कराना चाहता हूँ। राजा रावण ने क्योंकि बुद्धिमता होने के नाते, राजा ने उनसे नम्र निवेदन करते हुये उनके चरणों की वन्दना की, वन्दना करते हुये उन्होंने कहा अच्छा, क्योंकि ऋषि का हृदय प्रायः उदार होता है। उदारता में परणित हो गये, उन्होंने कहा तो अच्छा भगवन्!

महर्षि कुक्कुट मुनि का लङ्का में आगमन

राजा रावण और महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज दोनों ने बेटा! वहाँ से प्रस्थान किया। भ्रमण करते हुये, भयङ्कर वनों में भ्रमण करते हुये परन्तु देखो, वह भ्रमण

करते हुये राजा रावण ने लङ्का में प्रविष्ट कराया। राष्ट्र गृह में ऋषि का आगमन हुआ क्योंकि राष्ट्र गृह में एक महान् आत्मा का आगमन होना, उन दिनों मुनिवरो! देखो, वह बड़ा सौभाग्य का दिवस था। वह दिवस ऐसा सौभाग्यवत् था कि महारानी मन्दोदरी के हर्ष की कोई सीमा न रही। तो मन्दोदरी ने सुन्दर आसन दिया, ऋषिवर विराजमान हो गये, राजा रावण अपने मन्त्रिमण्डल में जा पहुँचे। ऋषि से कहा देवी ने हे प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ, क्या आप मेरे समीप आये हैं, परन्तु आप कजली वनों से आ रहे हैं। मेरी इच्छा ऐसी है कि आप क्या पान करेंगे? उन्होंने कहा हे देवी! जो इच्छा हो। मुनिवरो! देखो, महारानी मन्दोदरी ने, नाना प्रकार के पदार्थों का पान कराया। ऋषि ने बड़े सुन्दर रूपों से, उन नाना प्रकार के भोजनों को पान किया और आनन्दित हो गये। आनन्दित हो जाने के पश्चात् मुनिवरो! देखो, इतने में राजा रावण आ पहुँचे, मन्दोदरी चर्चा कर रही थी, हे प्रभु! जब लङ्का से आप अपना प्रस्थान करोंगे, तो मेरे जो पति हैं, आप मेरे पति को भी कुछ ऊँची शिक्षा प्रदान करते चले जाना। क्योंकि संसार में बेटा! जो पत्नी होती है, सदैव अपने पति के कल्याण की कामना करती रहती है, उसके मनों में एक इच्छा होती है कि मेरे पति के द्वारा, किसी प्रकार की भी त्रुटि न रह सके। अहा! महारानी मन्दोदरी ने ऋषि से कहा, ऋषि ने कहा देवी! मैं प्रयत्न करूँगा।

ऋषि द्वारा लङ्का निरीक्षण

राजा रावण का आगमन हुआ, राजा रावण ने कहा आईये, भगवन्! देखो, तो मुनिवरो! राजा रावण और मुनिवरो! देखो, ऋषिजनों का, दोनों का भ्रमण प्रारम्भ होने लगा। सबसे प्रथम राजा रावण ने बेटा! उन भवनों का निरीक्षण कराया, जो सबसे प्रथम देखो, भवन महाराजा कुबेर ने इसका निर्माण किया था। उसके पूर्व महाराजा कुबेर से पूर्व, महाराजा महीदन्त का भी भवन था, महाराजा शिव का भी था, नाना प्रकार के भवनों का निरीक्षण तो बेटा! बड़े आनन्दपूर्वक सुन्दर-सुन्दर भवनों का सुन्दर-सुन्दर भवन थे, उनका निरीक्षण किया और वह बड़े प्रसन्नता को प्राप्त होने लगे, ऋषि ने कहा रावण तुम्हारा राष्ट्र तो मुझे बहुत ही प्रिय लग रहा है। मेरा हृदय तो गद्-गद् हो रहा है, हृदय मग्न है, मुझे ऐसा

प्रतीत हो रहा है, क्या तुम्हारा राष्ट्र तो वास्तव में तो बहुत ही उन्नत है। ऋषि की वार्त्ता पान करते हुये, राजा रावण का हृदय मुनिवरो! प्रफुल्लित हो गया, आनन्दित हो गया। भ्रमण कराते हुये आगे, मुनिवरो! नाना प्रकार के जो स्वर्ण के भवन थे, उनका दिग्दर्शन कराया, क्योंकि लङ्का की प्रणाली परम्परा में, मैंने कई काल में प्रगट की है। क्योंकि राजा रावण से पूर्व लङ्का का स्वामी कुबेर था, और महाराजा कुबेर से पूर्व लङ्का का स्वामी महाराजा महीदन्त था, और महाराजा महीदन्त से पूर्व लङ्का का स्वामी शिव था, और महाराज शिव से पूर्व लङ्का का स्वामी मुनिवरो! देखो, राजा इत्यादि देखो, राजाओं की परम्परा चली आई। मैं उस परम्परा को आज वर्णन करना नहीं चाहता। केवल संक्षिप्त परिचय देना चाहता हूँ।

लङ्का में अनुसन्धानशालाएँ

मुनिवरो! देखो, राजा रावण ऋषि को अपनी लङ्का का निरीक्षण कराने लगे, नाना प्रकार के जो स्वर्ण के जो भवन थे, उनमें जा करके ऋषि से राजा ने कहा हे ऋषिवर! यह मेरे गृह में यह देखो, यह स्वर्ण का भव्य भवन है जो महाराज शिव ने इसका निर्माण किया था, महाराज इसको आप दृष्टिपात कीजिये। ऋषिवर का हृदय प्रसन्न होने लगा, ऋषि ने कहा हे रावण! तुम्हारा राष्ट्र तो मुझे बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता है, जिस राजा के राष्ट्र में स्वर्ण के गृह हैं, वह राष्ट्र कितना पवित्र हो सकता है। परन्तु देखो, ऋषि को भ्रमण कराते हुये, राजा रावण बेटा! राजा रावण के नाना प्रकार की अनुसन्धानशालाओं में ले गये जहाँ मुनिवरो! यहाँ वायु अनुसन्धानशाला में ले गये। जहाँ वायु के ऊपर निरीक्षण हो रहा था, नाना प्रकार के वायु के परमाणुओं को एकत्रित किया जा रहा था, राजा रावण के राष्ट्र में वैज्ञानिक उनके ऊपर अन्वेषण कर रहे थे। क्या ये परमाणु कितने प्रकार के हैं, इनमें कितनी सूक्ष्मवत् है। मुनिवरो! देखो, इस प्रकार वायु अनुसन्धानशाला, आगे उन्होंने अग्नि अनुसन्धानशाला में प्रविष्ट कराया। उन्होंने कहा प्रभु! वह वायु अनुसन्धानशाला थी, यह अग्नि अनुसन्धानशाला है, इसमें अग्नि के ऊपर अन्वेषण होता है, अग्नि के परमाणुओं

को जाना जाता है। नाना प्रकार के बेटा! अग्नि के परमाणुवत् होते हैं, ऋषि का हृदय प्रसन्नता को प्राप्त होने लगा। राजा ने आगे भ्रमण कराते हुये, जल अनुसन्धानशाला में ले गये, उन्होंने कहा प्रभु यह मेरे राष्ट्र में जल अनुसन्धानशाला है, क्या जल के परमाणु क्या-क्या कार्य कर सकते हैं, जल के परमाणुओं को हमारे यहाँ वैज्ञानिक किस-किस प्रकार एकत्रित करते हैं, भगवन्! यह हमारे यहाँ जल अनुसन्धानशाला है। नाना प्रकार की अनुसन्धानशालाओं में भ्रमण कराते हुये, राजा ने कहा आईये भगवन्! देखो, मुनिवरो! वह अन्तरिक्ष अनुसन्धानशाला में जा पहुँचे। महाराज! यह मेरे राष्ट्र में अन्तरिक्ष अनुसन्धानशाला है, देखो, मानव के मुखारबिन्दु से शब्द का जन्म होता है, वह शब्द अन्तरिक्ष में किस प्रकार लय होता है, और कितनी तरङ्गें होती हैं, उन तरङ्गों को हमारे राष्ट्र में जाना जाता है, प्रभु! क्योंकि यह अन्तरिक्ष अनुसन्धानशाला ही है। मानव जब शब्दों का उच्चारण करता है, तो एक शब्द में कितनी तरङ्गें होती हैं। कितनी सूक्ष्म तरङ्गें होती हैं, उन तरङ्गों में भी कितने प्रकार की तरङ्गें, किस-किस प्रकार की तरङ्गें, क्या-क्या प्रभाव लाती है। यह भगवन् हमारे यहाँ अन्तरिक्ष अनुसन्धानशाला में प्रायः वैज्ञानिक करते रहते हैं। भ्रमण कराते हुये, बेटा! वह पृथ्वी अनुसन्धानशाला में ले गये। उन्होंने कहा यह हमारे यहाँ पृथ्वी अनुसन्धानशाला है। भगवन्, पृथ्वी के ऊपर अन्वेषण होता रहता है, नाना प्रकार के देखो, जितने प्रकार के इसमें पार्थिव तत्त्व हैं, अहा! कितनी अग्नि है कितने वायु के हैं, किस के ऊपर भगवन् अनुसन्धान हो रहा। ऋषि का हृदय बड़ा ही प्रसन्न है। हमारे यहाँ यह पृथ्वी अनुसन्धानशाला है।

वैज्ञानिक नरान्तक

बेटा! आगे भ्रमण कराते हुये राजा रावण ने कहा आईये भगवन्! मैं अपने पुत्र नरान्तक के द्वारा आपका भ्रमण कराता हूँ। राजा रावण का पुत्र नरान्तक के समीप जब ले गये, राजा ने कहा यह मेरा पुत्र नरान्तक है। नरान्तक से जब ऋषि का परिचय हुआ, तो ऋषि ने कहा कहिये नरान्तक! तुम्हारी क्या प्रशंसा है? उन्होंने कहा प्रभु! मैंने चन्द्रमा में जाने वाले नाना प्रकार के यन्त्रों का

अन्वेषण किया है, और यन्त्रों का निर्माण किया है। मैं नित्य प्रति चन्द्रमा की यात्रा कर लेता हूँ, क्योंकि मेरे यन्त्रों में इतनी गति है, क्या मैं नित्य प्रति चन्द्रमा की यात्रा कर लेता हूँ, मैंने भगवन् जाना है। नाना प्रकार के यन्त्रों का, इन यन्त्रों को भगवन्! मैंने अन्वेषण किया है, और भी लोकों में जाने का मैं प्रयास कर रहा हूँ। मङ्गल में जाने का भी प्रयास कर रहा हूँ, शुक्र में जाने के लिये मैं उत्सुक रहता हूँ। राजा रावण ने कहा भगवन्! यह मेरा पुत्र नरान्तक है, ऋषि का हृदय बड़ा प्रसन्न हुआ। ऋषि ने कहा रावण वास्तव में तुम्हारी लङ्का तो बड़ी उन्नत है, तुम्हारी लङ्का में तो महान् उन्नति हो रही है।

चिकित्साशाला

देखो, मुनिवरो! राजा रावण आगे भ्रमण कराते हुये नाना प्रकार की चिकित्साशाला में ले गये। अहा! चिकित्साशाला में भ्रमण कराते हुये कहा कि महाराज! यह हमारे यहाँ चिकित्साशाला है, इसमें चिकित्सा होती है, मानव के मस्तिष्क को, मानव के हृदय से दूरी कर दिया जाता है। परन्तु वह मस्तिष्क इसी प्रकार औषधियों से युक्त कर दिया जाता है, भगवन्! देखो यह महात्मा दधीचि अश्वनी कुमारों ने विद्या परणित कराई थी। वह हमारे यहाँ विद्या परणित हो रही है। महाराज यह परम्परागतों की विद्या है, यह मैंने अपने राष्ट्र में स्थापित की है, अश्वनी कुमार जैसे वैद्यराज हमारे यहाँ इस विद्या का अन्वेषण करते हैं, इस विद्या को विचार-विनिमय करते हैं। चिकित्सा भी होती रहती है, भगवन्! मैं – हमारे यहाँ एक चिकित्सालय है, ऋषि का हृदय बड़ा ही प्रसन्न हुआ, और अश्वनी कुमारों से उनका मेल हुआ, परन्तु विचार-विनिमय होता रहा, अश्वनी कुमारों के कार्य की सराहना की।

अन्त में बेटा! भ्रमण कराते हुये राजा नाना प्रकार के मार्गवेत्ताओं के द्वारा ले गये। महाराज रावण मुनिवरो! मेरे राष्ट्र में सुन्दर-सुन्दर मार्ग हैं, और यह मार्गवेत्ता हैं, मार्ग का निर्माण करने वाले हैं। भगवन् मेरे राष्ट्र में सुन्दर-सुन्दर मार्गशालाएँ हैं। मुनिवरो! ऋषि ने जब भ्रमण किया और मार्गों के विशेषज्ञों के दर्शन हुये, तो ऋषि का हृदय बेटा! और भी प्रसन्न हो गया, प्रफुल्लित हो गया।

ऋषि ने कहा धन्य है राजन्! मुझे तो तुम्हारे राष्ट्र को दृष्टिपात करके, मेरा तो हृदय बड़ा ही प्रसन्न है, मैं आज जितनी प्रशंसा कर ही नहीं पाता।

लङ्का में ऋषि को अग्नि का आभास

मुनिवरो! देखो, भ्रमण करते हुये, राजा रावण ने कहा कहिये भगवन्! जब सर्वत्र लङ्का का भ्रमण कर लिया, उन्होंने कहा कहिये भगवन् आप को मेरा राष्ट्र कैसा प्रतीत हुआ? इस समय ऋषि ने कहा, राजन्! मुझे तो तुम्हारा राष्ट्र बड़ा ही उन्नत प्रतीत हुआ, परन्तु जहाँ मुझे उन्नत प्रतीत हुआ, वहाँ मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, अनुभव हुआ, क्या तुम्हारी लङ्का में कुछ समय के पश्चात् यहाँ अग्नि प्रदीप्त हो जायेगी। जब ऋषि ने ऐसा कहा कि अग्नि प्रदीप्त हो जायेगी, राजा ने नत-मस्तिष्क हो करके कहा प्रभु! ऐसा आपने क्यों कहा है? ऐसा क्यों, ऋषि ने कहा हे राजन्! यह जो राष्ट्र है यह तुम्हारा भौतिकवाद में बहुत ही उन्नत है। परन्तु तुमने देखो, नाना प्रकार के सुन्दर-सुन्दर भवनों का निरीक्षण कराया, देखो, नाना मार्गशालाएँ, चिकित्साशालाएँ, विज्ञानशालाएँ, चन्द्रशालाएँ, वायुशालाएँ, नाना प्रकार की शालाओं का तुमने निरीक्षण कराया, परन्तु तुम्हारे राष्ट्र में कोई चरित्रशाला मुझे प्रतीत नहीं हुई। यदि तुम्हारे राष्ट्र में मुझे चरित्रशाला प्रतीत होती तो मेरा हृदय स्वयं पुकारता। मानो मुझे ऐसा प्रतीत होता है, **जिस राजा के राष्ट्र में चरित्र नहीं होता, उस राजा के राष्ट्र में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है।** तो हे राजन्! मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है, क्या तुम्हारे राष्ट्र में कुछ समय के पश्चात् यहाँ अग्नि प्रदीप्त हो जायेगी। मेरे प्यारे! वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि मानो ऋषिवर! क्या राजा का राष्ट्र केवल भवनों से, मार्गों से ऊँचा नहीं बनता, चन्द्रमा से और नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में जाने से ऊँचा नहीं बनता। यहाँ ऋषि कहता है, वेद का आचार्य कहता है कि मानव के जीवन का निर्माण मानव के लिये निर्माणाशाला होनी चाहिये। क्या मानव का निर्माण तो मुनिवरो! देखो, सुन्दर माताएँ हों, मुनिवरो! देखो, सुन्दर गृह हों, जहाँ मानव का निर्माण हो।

क्रमशः.... **दिनाँक :** 15 सितम्बर, 1969

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. जिस समय वाणी में रजोगुण प्रधान होता है, उस समय 384 बार एक क्षण में पृथ्वी की परिक्रमा कर जाती है।
2. जब तमोगुण प्रधान होता है, उस समय 484 बार एक क्षण में पृथ्वी की परिक्रमा कर देती है।
3. वेदरूपी प्रकाश का जब भानू उदय होता है, उस समय मानव का जो अन्तःकरण है उसमें जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों की उपलब्धि होने लगती है।
4. जब वाणी में भ्रष्टपन आ जाता है तो हृदय में भी आ जाता है।
5. वेदों के रस का नाम ही वेदान्त कहा गया है।
6. मानव को अपने विचारों को सुन्दर बनाना है।
7. जो भी मानव जैसा कर्म करता है, वैसा उसके समीप आता रहता है।
8. हृदय उस काल में पवित्र बनता है, जब यह मन स्थित हो जाता है।
9. संसार में मानव के लिये तीन वस्तुयें विचारने की हैं – सबसे प्रथम प्रकृति, द्वितीय आत्मा, तृतीय ब्रह्म को माना गया है। तीनों के स्वरूपों को जानना हमारी महत्ता मानी गयी है।
10. चली गयी चेतना का नाम आत्मा स्वीकार किया जाता है।
11. आत्मा के लिये संसार रचा जाता है, रचने वाला प्रभु है और रची जाने वाली प्रकृति है।
12. ऋषि-मुनि होते हैं, तपे हुये पुरुष होते हैं, उनका एक विचार होता है।
13. संस्कार जो हैं ये मन की आभा है।
14. प्रकृति का यदि कोई सूक्ष्म तत्त्व है तो वह मन है।
15. संस्कारों के न रहने का नाम ही मोक्ष कहा जाता है।
16. जो आत्मवेत्ता पुरुष होते हैं, जो आत्मा को जान लेते हैं उनके सम्पर्क में जाने से मानव का हृदय परिपक्व होता है।

।। ओ३म् ।।

। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

राष्ट्र कल्याणार्थ नवम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

दिनाँक 13 नवम्बर 2022 रविवार से 20 नवम्बर 2022 रविवार तक

यज्ञस्थलीः देवभूमि, मौहल्ला तिहाई, ग्राम खरखौदा, (मुण्डा महादेव मन्दिर के पास) मेरठ

–: निमन्त्रण पत्र :–

प्रिय आत्मीय स्वजनों,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् आदि ऋषि पूज्य गुरुवर ब्रह्मा जी महाराज के परमप्रिय एवम् ज्येष्ठ शिष्य पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (त्रेताकालीन शृङ्गी ऋषि जी महाराज) की पावमानी प्रेरणा एवम् शुभ आशीर्वाद से महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि याग प्रचार समिति ग्राम खरखौदा के तत्त्वावधान में **(राष्ट्र कल्याणार्थ नवम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ)** वैदिक परम्परा के अनुसार आदि ऋषियों द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड पद्धति द्वारा सम्पन्न होगा। जिसको इस कलयुग में पुनः से पूज्यपाद गुरुदेव ने जागृत किया और अपनी ये दिव्य ज्योति अपने शिष्यों को इस विश्व में प्रकाशमान बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। उसी मर्यादा को ऊर्ध्वागति में सम्पन्न बनाते हुए प्राणी मात्र के जीवन की जीवन सत्ता को सम्पन्न बनाने के लिए इस महायज्ञ का आयोजन देवभूमि, मौहल्ला तिहाई, ग्राम खरखौदा में आप सबके सहयोग से अत्यन्त श्रद्धा व हर्षोल्लास के सङ्ग पाँच यज्ञ वेदियों पर सम्पन्न होगा। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि इस महायज्ञ में प्रातः व साँय समयानुसार अपने परिवार, सम्बन्धी व ईष्ट मित्रों सहित उपस्थित होकर तन, मन, धन से आहुति प्रदान करते हुए अपने जीवन कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करें।

यज्ञ के ब्रह्मा – आचार्य श्री गुरुवचन शास्त्री जी, लाक्षागृह, वारणावत।

आचार्य एवम् वेदपाठी – श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, वारणावत एवम् गुरूकुल गौतम नगर नई दिल्ली।

–: कार्यक्रम :–

दिनाँक 13 नवम्बर 2022 रविवार से 19 नवम्बर 2022 शनिवार तक

प्रातः 7:15 बजे ओ३म् ध्वजारोहण (प्रथम दिवस) एवम् ब्रह्मयज्ञ सन्ध्या प्रतिदिन

प्रातः 8:00 बजे से **11:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

सायं: 2:15 बजे से **5:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

दिनाँक 20 नवम्बर 2022 रविवार प्रातः

प्रातः 8:00 बजे से **11:00 बजे** तक यज्ञ और महायज्ञ की पूर्णाहुति तत्पश्चात् प्रवचन एवम् आशीर्वाद, शान्ति पाठ व ब्रह्मभोज। **निवेदक समस्त खरखौदा निवासी**

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	160.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	50.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेध-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	55.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	160.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
80.	यौगिक प्रवचन माला भाग-20	160.00
81.	यौगिक प्रवचन माला भाग-21	170.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, पेनड्राइव के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09897695391
2. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
3. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पञ्चशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
4. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
5. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
6. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। फोन नं. 0120-4202763, मो. नं. 9818079943
7. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
8. आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, मं.न. 209 ग्रीन हाईटस A to Z रूड़की रोड़, मोदीपुरम्, मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09411823200
9. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पँचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
10. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
12. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
13. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
14. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
15. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्रीमति रेणु तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्री रत्न तुली	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुमन त्यागी, मुम्बई	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

सूचना

पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80-जी के अन्तर्गत छूट की सुविधा उपलब्ध है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

प्रभु! हम चाहते क्या हैं? हमारी कामना क्या है? हमारी एक ही तो कामना है कि हमारा हृदय स्वच्छ बन जाए। हमारे हृदय में श्रद्धा उत्पन्न हो जाए। हम सत्य को स्वीकार करने लगें। सत्य क्या है? सत्य वह कहलाता है जो प्रभु का दिग्दर्शन है, सत्य मानवीय दर्शन है। मानवीय दर्शन क्या है? अपने में ही अपनेपन का दर्शन करना, वह मानवीय दर्शन कहलाता है।

इसीलिए हे प्रभु! मैं श्रद्धा के क्षेत्र में जाना चाहता हूँ क्योंकि श्रद्धा हृदय में रहती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 51 : अंक : 592
अक्टूबर 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2022-2023
Customer I.D. – 3000019591
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-10-2022
Published on 5th day of the same month

वर्ष 51 : अंक : 592
अक्टूबर 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2022-2023
Customer I.D. – 3000019591
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-10-2022
Published on 5th day of the same month